ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५८ अंक - ४ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र फरवरी (द्वितीय) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

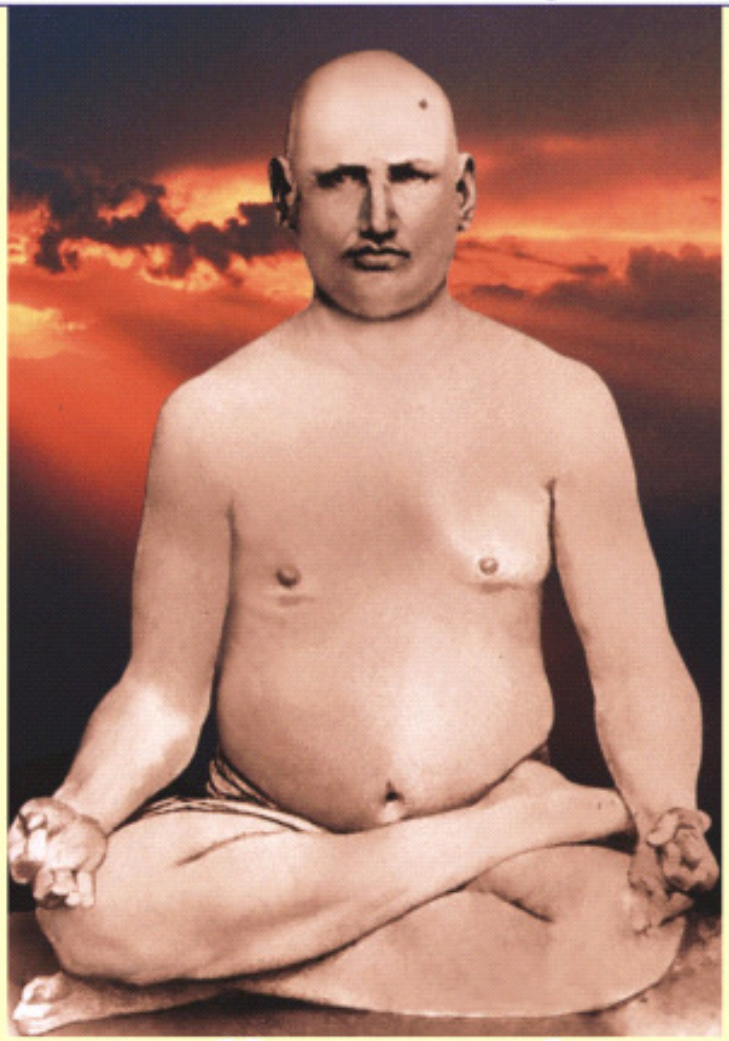

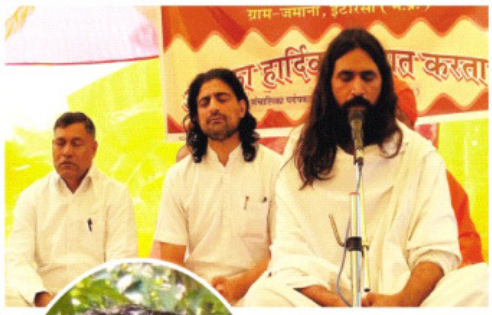

सामवेद पारायण यज्ञ की झलकियाँ

महर्षि दयानन्द उद्यान,
(गुरुकुल आश्रम)
ग्राम–जमानी,
इटारसी (म.प्र.)
संचालिका
परोपकारिणी सभा

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : ४
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: माघ शुक्ल, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

फरवरी द्वितीय २०१६

अनुक्रम

१. आर्य समाज के स्तम्भ आचार्य बलदेव	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. पुनरुत्थान युग का द्रष्टा	स्व. डॉ. रघुवंश	१५
४. अथ सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम्	शिवनारायण उपाध्याय	२०
५. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२४
६. शैक्षणिक यात्रा - एक यात्री	दिलीप अधिकारी	२५
७. जिज्ञासा समाधान-१०५	आचार्य सोमदेव	३२
८. स्वामी विद्यानन्द सरस्वती- परिचय		३३
९. एक असंगत लेख की शव-परीक्षा	सत्येन्द्र सिंह आर्य	३४
१०. प्रतिक्रिया		३५
११. स्तुता मया वरदा वेदमाता-२८		३७
१२. संस्था-समाचार		३९
१३. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

आर्य समाज के स्तम्भ आचार्य बलदेव

स्वतन्त्रता के पश्चात् आर्य समाज के संगठन में निरन्तर क्षीणता चल रही है। जब समाज में धन नहीं था, साधन नहीं थे, विज्ञान और तकनीक की वर्तमान सुविधा नहीं थी, आज जितनी संस्थाएँ हैं, उतनी संस्थायें नहीं थीं, तब भी आर्य समाज निरन्तर प्रगति करता रहा, आर्य समाज की शक्ति निरन्तर बढ़ती रही। निजामशाही के विरुद्ध आर्य समाज के आन्दोलन ने संगठन को समाज का नेता बना दिया था। राजनीति हो या समाज-सुधार का क्षेत्र, आर्य समाज का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता था।

स्वतन्त्रता के पश्चात् कार्य में शिथिलता आई, उसका मुख्य कारण संगठन के लोगों का सक्रिय राजनीति में न जाना रहा। आर्य समाज का अपना राजनैतिक मञ्च था नहीं, अत: आर्य समाज के कार्यकर्त्ता जिसके सम्पर्क में थे, उससे जुड़ गये। अधिकांश लोग सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी से जुड़े तो कुछ लोग साम्यवादी, स्वतन्त्र पार्टी से और आगे जब जनसंघ का गठन हुआ, तो अधिकांश आर्य समाज के लोगों को उनके विचारों के सब से निकट यही पार्टी लगी, वे सब उससे जुड़ गये। इन राजनीतिक लोगों से संगठन को कुछ लाभ हुआ, परन्तु अधिकांश रूप में संगठन की क्षति हुई। इन सब राजनीतिक लोगों ने अपने संगठन में आर्य समाज का कार्य नहीं किया, परन्तु आर्य समाज को उन-उन राजनैतिक संगठनों से जोड़ने का प्रयास किया। अपनी सफलता और पार्टी में अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिये आर्य समाज को उसके पिछलग्गू के रूप में उपयोग किया। इस स्वार्थ की लड़ाई ने आर्य समाज के संगठन को विघटन में बदल दिया।

स्वतन्त्रता के प्रारम्भ के समय में राजनैतिक संगठन और दलों के पास आर्य समाज जैसे निष्ठावान्, समर्पित कार्यकर्त्ता बड़ी संख्या में नहीं थे। आर्य समाज का प्रभाव क्षेत्र व्यापक था। समर्पित कार्यकर्त्ता थे, बुद्धिजीवी लोगों पर समाज का प्रभाव था, परिणामस्वरूप आर्य समाज के लोगों को वहाँ महत्त्व मिला और उनका प्रभाव क्षेत्र भी बढ़ा। लेकिन इसके साथ आर्य समाज की शक्ति का ह्रास होने लगा। आर्य समाज में कार्यकर्त्ताओं का अभाव होने लगा। दूसरे संगठन आर्य समाज पर हावी होने लगे। कांग्रेस भी ईसाई और मुस्लिम परस्त होने के कारण सैद्धान्तिक रूप से बहुत दूर थी और संघ के कार्य और विचार रूढ़िवाद, अन्धविश्वास, पुराणपन्थी विचारों को अपने लिए सुविधाजनक मानते थे, अत: इनको आर्य समाज की विचारधारा अपने लिए बाधक लगती थी। इस कारण इन संगठनों को आर्य समाज के बढ़ने से कोई लाभ नहीं था और कोई रुचि भी नहीं थी। इसके विपरीत आर्य समाज संगठन की प्रजातान्त्रिक पद्धति का लाभ उठाकर ये लोग आर्य समाज के संगठन में घुस गये और उन्होंने आर्य समाज की प्रखरता कम करने का कार्य किया। इसे कहीं कांग्रेसी और कहीं हिन्दू संगठन बनाने का प्रयास किया। उन लोगों ने समाज के भवनों, संस्थाओं और समितियों के पदों को संस्थागत के साथ ही व्यक्तिगत रूप से अपने अधिकार में लिया और अपने लिये उनका उपयोग किया।

आर्य समाज के संगठन के शिथिल होने से इसका प्रचार तन्त्र शिथिल हो गया और कार्यकर्त्ता निर्माण के संस्थान ही समाप्त हो गये। आर्य समाज की आवाज समाज में समाप्त-प्राय: हो गई। आर्य समाजी लोगों को लगने लगा कि उनका संगठन समाप्त हो गया और वे आधार हीन हो गये। ऐसे समय में आर्य समाज की संस्थाओं को जीवित रखने, खड़ा करने में जिन व्यक्तियों और संस्थाओं का योगदान है, उनमें आचार्य बलदेव जी का प्रमुख स्थान है। आचार्य बलदेव जी जैसे व्यक्तियों ने और उन विचारों पर टिकी गुरुकुल संस्थाओं ने आर्य समाज की क्षीण होती हुई क्षति को न केवल रोकने का कार्य किया, अपितु समाज में

आर्य सिद्धान्तों को प्रभावी रूप में प्रस्तुत करने का भी कार्य किया। आज आर्य समाज का संगठन भले ही बिगड़ा हो, परन्तु समाज के लोगों ने उनकी ओर देखना छोड़कर, अपने स्तर पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। गत २०-३० वर्षों के आर्य समाज के इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो देखते हैं कि आचार्य बलदेव जी जैसे लोगों ने अपने पुरुषार्थ से जहाँ कार्यकर्त्ताओं का निर्माण किया है, वहीं उनके माध्यम से परिवार और समाज के सुधार में भी बड़ा योगदान दिया है। आज समाज के प्रचार-प्रसार में गति आई है। लेखन-प्रकाशन कार्य तीव्र गति से बढ़ रहा है। समाज ने विरोधी लोगों और विचारों से संघर्ष करने और उन्हें निष्प्रभावी करने-कराने में भी सफलता प्राप्त की है।

आचार्य बलदेव जी का जन्म हरियाणा के उस क्षेत्र का है, जहाँ एक शताब्दी से गुरुकुल झज्जर जैसी संस्था सक्रिय है। आज जब आधुनिक शिक्षा के बढ़ते प्रभाव और उसके आकर्षण के कारण प्राचीन शिक्षा पद्धति समाप्त प्राय: हो चली है, उस काल में भी यह गुरुकुल आर्ष पद्धति का दीपक थामे, समाज के अन्धकार में अपने कदम बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है। इसी संस्था के सम्पर्क में आकर आचार्य बलदेव सांसारिक पथ को तिलाञ्जलि देकर इस संघर्षपूर्ण मार्ग पर चल पड़े।

आचार्य बलदेव जी के साहस की बात थी कि वे सांसारिक दृष्टि से बी.ए. पास कर सरकारी नौकरी कर रहे थे, परन्तु इस मध्य जब वे गुरुकुल में आकर रहने लगे, उनका सांसारिक आकर्षण घटता गया और आश्रम का जीवन उन्हें आकर्षित करने लगा। वे सरकारी सेवा का कार्य छोड़ कर गुरुकुलीय व्यवस्था के अंग बन गये। अष्टाध्यायी महाभाष्य पढ़ने में समय लगा, फिर गुरुकुल झज्जर के मुख्याध्यापक बनकर अष्टाध्यायी महाभाष्य परम्परा से छात्रों को अध्ययन कराना प्रारम्भ कर दिया। गुरुकुलीय जीवन की तपस्या और आर्ष-पद्धति का पठन-पाठन उनके जीवन का ध्येय बन गया। गुरुकुल में रहते हुए जहाँ वे छात्रों को शास्त्र पढ़ाते थे, वहीं बचे समय में गो-सेवा का कार्य करना, उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया था।

गुरुकुल झज्जर छोड़ने के बाद भी ये दोनों कार्य उनकी जीवनचर्या के भाग बने रहे। गुरुकुल कालवा को उन्होंने अपनी संकल्पता और विचार के अनुसार चलाया। वहीं रहते हुए अनेक विद्वान्, कार्यकर्त्ता, समाज सेवक उन्होंने तैयार किये। आज संसार के सबसे अधिक चर्चित साधु स्वामी रामदेव जी ने भी गुरुकुल कालवा में रहकर आचार्य बलदेव जी के पास शास्त्रों का अध्ययन किया। आचार्य बलदेव जी को कोई कष्ट, असुविधा होने पर स्वामी रामदेव जी ने उनकी सेवा सहायता की और गुरुवत् सम्मान दिया। आर्य समाज में दर्जनों विद्वान् जो अध्ययन-अध्यापन और समाज सेवा के कार्य में लगे हैं, वे सब आचार्य बलदेव जी की तपस्या के ही परिणाम हैं। आज समाज में ऋषि दयानन्द का कार्य करने वालों की बड़ी सूची में इन गुरुकुलों से निकलने वाले स्नातक हैं।

आधुनिक शिक्षा ने गुरुकुल की शिक्षा-पद्धति को सांसारिक प्रतिस्पर्धा में निरर्थक सिद्ध कर दिया है, जिसके कारण सभी गुरुकुल अपनी शिक्षा प्रणाली छोड़ स्कूली शिक्षा के अनुगामी हो गये हैं। यह होने पर भी समाज-सेवा, शास्त्र का व्याख्यान और सिद्धान्तों का प्रचार गुरुकुल शिक्षा पद्धति के अतिरिक्त अन्य किन्हीं प्रकार से सम्भव नहीं हैं। दोष हैं सामाजिक व्यवस्था की कमी और संगठन की दुर्बलता। जब से गुरुकुल की शिक्षा पद्धति बदली है, उपदेशक विद्यालय, आश्रम व्यवस्था का अभाव हुआ है। आर्य समाज के अन्दर पुरोहित, विद्वान्, अध्यापक, उपदेशक, प्रचारक, कार्यकर्त्ताओं की कमी हो गई है। जो थोड़े विद्वान् दिखाई देते हैं, वे आचार्य बलदेव जी जैसे लोगों के प्रयास का परिणाम हैं।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के जिस बड़े संकट को सरकार और तथाकथित शिक्षित जन समझ भी नहीं सके, उसकी ओर आचार्य बलदेव जी ने न केवल समाज का ध्यान आकर्षित किया, अपितु संघर्ष करते हुए इस संकट से देश को बचाने में पुरुषार्थ भी किया। यह कार्य था गौशालाओं के माध्यम से गौधन और पशुधन को बचाने का कार्य।

आचार्य बलदेव जी ने बड़ी-बड़ी गौशालायें स्थापित कर गौओं को बचाने का कार्य किया। उन्होंने आन्दोलन करके समाज को जाग्रत किया और सरकार को इसके लिए कदम उठाने के लिए बाध्य किया। आज हरियाणा ऐसा प्रदेश है, जहाँ गौसेवा आयोग ने समाज और सरकार को जगाया है। आज देश के जिस महत्त्वपूर्ण गोधन को बड़ी तेजी से व्यापार और निर्यात के प्रलोभन में फँसकर सरकारें नष्ट कर रही थीं, उस पर अंकुश लगा है। हमारे पूर्वजों ने सदा प्रजा के साथ पशुओं की कामना की है। पशु हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं, इसलिये पशु को धन कहा गया है। जो व्यक्ति पशुओं को नष्ट कर, जीवित रहने की कामना करते हैं, उनका जीवन भी नष्ट हो जाता है। इस कारण आचार्य बलदेव जी ने ज्ञापन दिये और सरकार को गौधन बचाने के लिये बाध्य किया। आचार्य जी के आन्दोलन करने का सामर्थ्य, उनके लोक-सम्पर्क के कारण था, साधारण जन में उनकी पहुँच और पकड़ अच्छी थी। वे यज्ञ और उपदेश के कार्यक्रम में सदा ही लगे रहते थे। युवाओं को प्रेरणा देना, उन्हें सामाजिक कार्यों के लिये प्रेरित करना, उनके स्वभाव में था। आज भी उनके साथ संघर्ष करने वाले युवाओं की संख्या कम नहीं है। इसी गुण के कारण समाज में सुधार के अनेक कार्य वे अपने जीवन में कर सके।

आचार्य बलदेव जी के अपने जीवन में सबसे बड़ा आन्दोलन तथाकथित संत रामपाल को जेल तक पहुँचाने का था। रामपाल दास ने अपने पाखण्ड के कारण भोलेभाले लोगों को अपने चंगुल में फँसा रखा था। अपने भक्तों के जनबल व धनबल के आधार पर वह बड़े-बड़े लोगों को अपने वश में रखता था। सरकार के मन्त्री, उनके परिवार जन, सरकारी अधिकारी तथा धनी लोग उसके षड़यन्त्र का अंग बने हुए थे। वह इन लोगों की विलासिता की प्रवृत्तियों को पूर्ण करने में सहयोग देता था तथा वे लोग उसे सरकार और प्रशासन के स्तर पर संरक्षण देते थे। कोई भी शिकायत उसके विरुद्ध सुनी नहीं जाती थी। उसके आश्रम के आसपास रहने वाले गरीब लोग उससे पीड़ित थे। ऐसे लोगों की जमीनों पर वह बलपूर्वक कब्जा करता था। क्षेत्र की महिलाओं का शोषण करने में उसका आश्रम अनैतिक व अवैध कामों का अड्डा बना हुआ था।

आचार्य बलदेव जी ने ग्रामवासियों के सहयोग से उसके विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन किया। सरकार को न चाहते हुए भी जन आन्दोलन के सामने झुकना पड़ा और उसे आश्रम से निकालकर जेल में भेजना पड़ा। वहाँ से निकलकर उसने बरवाला में आश्रम बनाया और अपनी गतिविधियों को बनाये रखा। न्यायालय ने रामपाल के आश्रम को लौटाने का आदेश दिया, इसके विरोध में फिर आक्रोश उमड़ा। आचार्य बलदेव जी ने मोर्चा सम्भाला। इस प्रखर आन्दोलन में रामपाल दास के आश्रम से गोलियाँ चलीं। तीन युवकों व एक वृद्ध का बलिदान हो गया। स्थिति विकट बन गई। रामपाल दास ने मोर्चेबन्दी कर सरकार से संघर्ष करने का प्रयास किया, परन्तु न्यायालय के आदेश पर सरकार को त्वरित कार्यवाही करनी पड़ी। हजारों पुलिस बल के द्वारा आश्रम को घेर कर उसके भक्तों को बाहर निकाला गया। रामपाल दास को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। अपने को बुद्धिमान समझने वाले लोग इस संघर्ष को अनावश्यक समझते थे, परन्तु यदि सत्य की रक्षा करनी है और जनता को पाखण्ड के शोषण से बचाना है तो यह बलिदान की परम्परा अपनानी होगी। आचार्य बलदेव जी आर्य समाज के इतिहास में संघर्ष और बलिदान की परम्परा को पुनः स्थापित करने वाले इतिहास पुरुष हैं। आचार्य जी आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के दो बार प्रधान रहे तथा वर्तमान समय में वे सार्वदेशिक सभा के प्रधान थे। आर्य समाज और हरियाणा की जनता उनकी सदैव ऋणी रहेगी। उनकी यश काया को जरा-मरण का कोई भय नहीं।

नास्ति येषां यशः काये जरामरणजंभयम्।

- डॉ. धर्मवीर

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२**

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

ऋषि जीवन विचार:- यह आनन्ददायक लक्षण है कि 'परोपकारी' ऋषि मिशन का एक 'विचारपत्र' ही नहीं, अब आर्य मात्र की दृष्टि में आर्यों का एक स्थायी महत्त्व का ऐसा शोधपत्र है, जिसने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया है। इसका श्रेय इसके सम्पादक, इसके मान्य लेखकों व परोपकारिणी सभा से भी बढ़कर इसके पाठकों तथा आर्य समाज की एक उदीयमान युवा मण्डली को प्राप्त है। परोपकारी की चमक व उपयोगिता को बढ़ाने में लगी पं. लेखराम की इस मस्तानी सेना का स्वरूप अब अखिल भारतीय बनता जा रहा है।

ऋषि जीवन विषयक तड़प-झड़प में दी जा रही नई सामग्री पर मुग्ध होकर अन्य -अन्य पत्रों का प्रबल अनुरोध है कि ऐसे लेख- नये दस्तावेजों का लाभ, हमारे पाठकों को भी दिया करें। एक ऐसा वर्ग भी है, जिसका यह दबाव है कि ये दस्तावेज हमें भी उपलब्ध करवायें। मेरा नम्र निवेदन है कि परोपकारिणी सभा के लिए इन पर कार्य आरम्भ हो चुका है। दिनरात ऋषि जीवन पर एक नये ग्रन्थ का निर्माण हो रहा है। दस्तावेज अब सभा की सम्पत्ति हैं। इनके लिये सभा के प्रधान जी व मन्त्री जी से बात करें। ये दस्तावेज अब तस्करी व व्यापार के लिए नहीं हैं। श्री अनिल आर्य, श्री राहुल आर्य, श्री रणवीर आर्य, श्री इन्द्रजीत का भी कुछ ऐसा ही उत्तर है। जिसे इस सामग्री के महत्त्व का ज्ञान है, जो इस कार्य को करने में सक्षम है, उसे सब कुछ उपलब्ध करवा दिया है। वह ऋषि की सभा के लिये जी जान से इस कार्य में लगा है। ऋषि के प्यारे भक्त भक्तिभाव से सभा को आर्थिक सहयोग करने के लिए आगे आ रहे हैं।

पहली आहुति दिल्ली के ऋषि भक्त रामभज जी मदान की है। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के मुलतान जनपद में जन्मे श्री रामभज के माता-पिता की स्मृति में ही पहला ग्रन्थ छपेगा। हरियाणा राजस्थान के उदार हृदय दानी भी अनिल जी के व मेरे सम्पर्क हैं। आर्य जगत् ऋषि का चमत्कार देखेगा। कुछ प्रतीक्षा तो करनी होगी। हमारे पास इंग्लैण्ड व भारत से खोजे गये और नये दस्तावेज आ चुके हैं। ऋषि के जीवन काल में छपे एक विदेशी साप्ताहिक की एक फाईल भी हाथ लगी है।

प्रो. मोनियर विलियम्स ने अपनी एक पुस्तक में आर्य सामाजोदय और महर्षि के प्रादुर्भाव पर लिखा है, ''भारत में दूसरे प्रकार की आस्तिकवादी संस्थायें विद्यमान हैं। अभी-अभी एक नये ब्राह्मण सुधारक का प्रादुर्भाव हुआ है। वह पश्चिम भारत में बहुत बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित कर रहा है। वह ऋग्वेद का नया भाष्य करने में व्यस्त है। वह इसकी एकेश्वरवादी व्याख्या कर रहा है। उसकी संस्था का नाम आर्यसमाज है। हमें कृतज्ञतापूर्वक इन संस्थाओं के परोपकार के श्रेष्ठ कार्यों के लिए उनका आभार मानना चाहिये। ये मूर्तिपूजा , संर्कीणता, पक्षपात, अंधविश्वासों तथा जातिवाद से किसी प्रकार का समझौता किये बिना युद्धरत हैं। ये आधुनिक युग के भारतीय प्रोटैस्टेण्ट हैं।''

प्रो. मोनियर विलियम्स के इस कथन से पता चलता है कि हर कंकर को शंकर मानने वाले मूर्तिपूजक हिन्दू समाज को महर्षि दयानन्द के एकेश्वरवाद ने झकझोर कर रख दिया था। जातिवाद पर ऋषि की करारी चोट का भी गहरा प्रभाव पड़ रहा था। अब पुन: अनेक भगवानों, अंधविश्वासों व जातिवाद को राजनेता खाद-पानी दे रहे हैं। हिन्दू समाज को रोग मुक्त कर सकता है, तो केवल आर्यसमाज ही ऐसा एकमेव संगठन है। इसके विरुद्ध कोई और नहीं बोलता।

डॉ. वेदपाल जी से विचार विमर्श:- मान्यवर डॉ. वेदपाल जी से चलभाष पर कुछ महत्त्वपूर्ण चर्चा हुई। **'नवयुग की आहट'** पुस्तक में इस सेवक ने पृष्ठ १२९ पर श्री मेहता राधाकिशन लिखित ऋषि जीवन (उर्दू ग्रन्थ) के प्रमाण से महर्षि की पवित्र सोच व अर्थ शुचिता का एक प्रसंग दिया है। वैदिक यन्त्रालय की स्थापना के समय आर्य समाजों व आर्य पुरुषों ने दान दिया। धन की फिर भी कमी रही। ऋषि ने भक्तों को ऋण देने की प्रेरणा दी, तो

मेहता राधाकिशन जी के अनुसार ला. साईंदास जी ने २५० रुपये दिये। यन्त्रालय चल पड़ा, तो ला. साईंदास जी की यह राशि लौटाई गई। आपने इसे लेने से इनकार कर दिया। ऋषि ने इस पर अप्रसन्नता प्रकट करते हुए आग्रह किया कि इसे क्यों न लौटाया जाये? आप इसे स्वीकार करें। किसी परोपकार के कार्य में लगा दें।

डॉ. वेदपाल जी ने ऋषि के पत्र-व्यवहार भाग दो के पृष्ठ ३२६ पर छपे भाई जवाहरसिंह के पत्र का प्रमाण देकर लिखा है कि ला. जीवनदास व ला. साईंदास जी ने एक-एक सौ रुपये दिये थे।

माननीय विचारक डॉ. वेदपाल जी का प्रश्न तो अच्छा है। तथ्य का निर्णय हो जावे तो भविष्य में कोई शंका न उठेगी। मेहता राधाकिशन जी भी ऋषि के काल के थे। ला. साईंदास के निकटस्थ सहयोगी थे। ऐसा प्रतीत होता है कि जवाहरसिंह जी ने पहले दिये गये एक-एक सौ रुपये की चर्चा की है, परन्तु जो धन पहले दिया गया था, उसके लौटाने की बात किसी ने नहीं लिखी। यह रु. २५० दोबारा ऋण रूप में दिये गये होंगे। यह भी नहीं भूलना चाहिये कि ला. साईंदास जी के निधन के समय भी राधाकिशन जी समाज के एक अग्रणी व्यक्ति थे। यह घटना मेहता जी की पुस्तक में ही दी गई है। एक सौ व ढाई सौ की भ्रान्ति उनसे होने की सम्भावना नहीं है। यह ऋषि जीवन का एक प्रेरक प्रसंग है। राशि कितनी थी-यह तो गौण बात है, फिर भी डॉ. वेदपाल जी की कोटि के विद्वान् ने प्रश्न उठाया है। मैंने जैसा जाना-समझा, पाठकों को विचारार्थ पुस्तक में दे दिया है। इस प्रसंग की सत्यता में तो संशय ही नहीं।

हैदराबाद में एक शास्त्रार्थः- अभी हैदराबाद में पुस्तक मेला हुआ है। श्री राहुल आर्य अकोला जी हैदराबाद के युवा आर्य मिशनरी रणवीर जी के संग मेला देखने चले गये। वहाँ मुसलमान भाइयों ने इनसे धर्म चर्चा छेड़ दी। थोड़ी-सी बात न रहकर इस चर्चा ने एक रोचक शास्त्रार्थ का रूप ले लिया। इस पर पं. रणवीर जी को एक पूरा लेख भेजने को कहा। यहाँ केवल दो बिन्दु दिये जाते हैं। मुस्लिम बन्धुओं ने इन्हें आर्यसमाजी जानकार डंके की चोट से कहा-तुम्हारे वेद में पैगम्बर मुहम्मद का नाम आता है। इन दोनों ने 'कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में' मेरी पुस्तक व ऐसा साहित्य पढ़ रखा था। झट से बोले- कुरान में हर सूरत से पहले ऋषि दयानन्द का नाम अभी दिखाते हैं। रहमान-उल-रहीम का तो सीधा-सा अर्थ दयालु दयानन्द या दयावान दयानन्द है। यह उत्तर पाकर उनके पैरों तले से धरती खिसक गई। फिर कहा- सामवेद के अध्याय में एक श्लोक आता है। इन्होंने फिर उनका भ्रम भञ्जन किया कि सामवेद में न कोई श्लोक है और न कोई अध्याय है। इनका उत्तर सुनकर फिर वे चौंक पड़े। और भी जो प्रश्नोत्तर हुए, वे सब उनकी आँखें खोलने वाले थे। उन्होंने जैसे-तैसे इनसे जान छुड़ाई। रणवीर जी ने यह जानकारी देते हुए कहा, ''आप वहाँ होते तो विधर्मियों को एक-एक प्रश्न पर निरुत्तर होते देखकर गर्वित होते।''

हिन्दू समाज में है कोई वक्ता, प्रवक्ता, विद्वान्, महात्मा जो आज ऐसे धर्म रक्षा कर सकता है? आर्य धर्म की रक्षा के लिये ऐसे स्वाध्यायशील सैंकड़ों युवक चाहिये।

हृदय की साक्षी-सद्ज्ञान वेदः- पं. गंगाप्रसाद जी चीफ जज की पुस्तक 'धर्म का आदि स्रोत' की कभी धूम थी। मेरे एक कृपालु मौलाना अब्दुल लतीफ प्रयाग ने भी इसे पढ़ा है। निश्चय ही वह इससे प्रभावित हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है। उसके नियम तथा ज्ञान वेद भी सर्वव्यापक हैं। कोई ऋषि की बात माने अथवा न माने, परन्तु ''दिल से मगर सब मान चुके हैं योगी ने जो उपकार कमाये।''

देखिये, इस समय मेरे सामने लण्डन की ईसाइयों की सन् १८७१ की एक पत्रिका है। इसमें लिखा है, " The land is the honestest thing in the world, whatever you give it you will get back again". So, in a far more certain sense, is it with the sowing of moral seed the fruit is certain." अर्थात्- भूमि संसार में सबसे प्रामाणिक (सत्यवादी) वस्तु है। आप इसे जो कुछ देंगे, यह आपको उपज के रूप में वही लौटायेगी। इससे भी बड़ा अटल सत्य यह है कि जो नैतिक बीज (कर्म) आप बोओगे, उसका फल भी अवश्य भोगोगे, पाओगे। इस अवतरण का प्रथम भाग वहाँ के कृषकों की लोकोक्ति है। पूरे कथन का अर्थ या सार यही तो है, जो करोगे सो भरोगे। वेद की कई ऋचाओं में कर्मफल सिद्धान्त

को कृषि के दृष्टान्त से ही समझाया है। पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने वेद प्रवचन में एक मन्त्र की व्याख्या में लिखा है कि ईश्वर के कर्म फल के अटल नियम का साक्षी, सबसे बड़ा साक्षी और विश्वासी किसान होता है। जुआ व लाटरी में लगे लोग इससे उलट समझिये। ईसाइयों की पत्रिका का यह अवतरण वैदिक कर्मफल सिद्धान्त की गूञ्ज नहीं तो क्या है? धर्म का, सत्य का स्रोत वेद है- यह इससे प्रमाणित होता है। ऐसी-ऐसी कहावतें वैदिक धर्म की दिग्विजय हैं।

हमारी विदेश मन्त्री सुषमा स्वराज जी ने टी.वी. पर एक करवा चौथ उपवास की बड़े लुभावने शब्दों में वकालत की थी। दैनिक पत्र-पत्रिकायें भी इसे सुहागनों का त्यौहार प्रचारित करती हैं। पत्नी के कर्मकाण्ड से पति की आयु बढ़ जाती है। कर्म पत्नी ने किया, फल पति को मिलता है। इन्हीं सुषमा जी ने गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करके तालियाँ बटोरी थीं। गीता कर्मफल सिद्धान्त का सन्देश देती है। करवा चौथ जैसे कर्मकाण्ड या इस प्रकार के अंधविश्वासों से गीता के मूल सिद्धान्त का खण्डन है या नहीं? इसी प्रकार पापों के क्षमा होने या क्षमा करवाने की मान्यता का उपरोक्त अवतरण से घोर खण्डन होता है । इस कथन में तो कर्म के फल की प्राप्ति Certain (सुनिश्चित) बताई गई है। कोई मत इस वैदिक सिद्धान्त के सामने नहीं टिकता । इसके अनुसार कुम्भ स्नान, तीर्थ यात्रायें व हज आदि सब कर्मकाण्ड ईश्वरीय आज्ञा के विपरीत हैं।

वह कौन स्वामी आया? :- हरियाणा के पुराने भजनीक पं. मंगलदेव का एक लम्बा गीत कभी हरियाणा के गाँव-गाँव में गूंजता था:- ''वह कौन स्वामी आया?''

सारे काशी में यह रुक्का (शोर) पड़ गया कि यह कौन स्वामी आ गया? ऋषि के प्रादुर्भाव से काशी हिल गई। मैं हरियाणा सभा के कार्यालय यह पूरा गीत लेने पहुँचा। मन्त्री श्री रामफल जी की कृपा से सभा के कार्यकर्ता ने पूरा भजन दे दिया। यह किस लिये? इंग्लैण्ड की जिस पत्रिका का हमने ऊपर अवतरण दिया है, उसमें ऋषि की चर्चा करते हुए सन् १८७१ में कुछ इसी भाव के वाक्य पढ़कर इस गीत का ध्यान आ गया। यह आर्य समाज स्थापना से चार वर्ष पहले का लेख है। सन् १८६९ के काशी शास्त्रार्थ में पौराणिक आज पर्यन्त ऋषि जी को पराजित करने की डींग मारते चले आ रहे हैं। इंग्लैण्ड से दूर बैठे गोरी जाति के लोगों में काशी नगरी के शास्त्रार्थ में महर्षि की दिग्विजय की धूम मच गई। हमारे हरियाणा के आर्य कवि सदृश एक बड़े पादरी ने काशी में ऋषि के प्रादुर्भाव पर इससे भी जोरदार शब्दों में यह कहा व लिखा, " The entire city was excited and convulsed." अर्थात् सारी काशी हिल गई। नगर भर में उत्तेजना फैल गई- ''यह कौन स्वामी आया?'' रुक्का (शोर) सारे यूरोप में पड़ गया। लिखा है, " The reputation of the cherished idols began to suffer, and the temples emoluments sustained a serious diminutation in their value." प्रतिष्ठित प्रसिद्ध मूर्तियों की साख को धक्का लगा। मन्दिरों के पुजापे और चढ़ावे को बहुत आघात पहुँचा। ध्यान रहे कि मोनियर विलियम्स के शब्दकोश में Convulsed का अर्थ कम्पित भी है। काशी को ऋषि ने कम्पा दिया।

जब ऋषि के साथ केवल परमेश्वर तथा उसका सद्ज्ञान वेद था, उनका और कोई साथी संगी नहीं था, तब सागर पार उनके साहस, संयम, विद्वत्ता व हुंकार की ऐसी चर्चा सर्वत्र सुनाई देने लगी।

ठाकुर रघुनाथ सिंह जयपुर:- महर्षि जी के पत्र-व्यवहार में वर्णित कुछ प्रेरक प्रसंगों तथा निष्ठावान् ऋषि भक्तों को इतिहास की सुरक्षा की दृष्टि से वर्णित करना हमारे लिए अत्यावश्यक है। ऐसा न करने से पर्याप्त हानि हो चुकी है। ऋषि-जीवन पर लिखी गई नई-नई पुस्तकों से ऋषि के प्रिय भक्त व दीवाने तो बाहर कर दिये गये और बाहर वालों को बढ़ा-चढ़ा कर इनमें भर दिया गया। ऋषि के पत्र-व्यवहार के दूसरे भाग में पृष्ठ ३६३-३६४ पर जयपुर की एक घटना मिलती हैं। जयपुर के महाराजा को मूर्तिपूजकों ने महर्षि के भक्तों व शिष्यों को दण्डित करते हुए राज्य से निष्कासित करने का अनुरोध किया। आर्यों का भद्र (मुण्डन) करवाकर राज्य से बाहर करने का सुझाव दिया गया। महाराजा ने ठाकुर गोविन्दसिंह तथा ठाकुर रघुनाथसिंह को बुलवाकर पूछा- यह क्या बात है?

ठाकुर रघुनाथ सिंह जी ने कहा- आप निस्सन्देह इन लोगों का भद्र करवाकर इन्हें राज्य से निकाल दें, परन्तु इस सूची में सबसे ऊपर मेरा नाम होना चाहिये। कारण? मैं स्वामी दयानन्द का इस राज्य में पहला शिष्य हूँ। महाराजा पर इनकी सत्यवादिता, धर्मभाव व दृढ़ता का अद्‌भुत प्रभाव पड़ा। राजस्थान में ठाकुर रणजीत सिंह पहले ऋषि भक्त हैं, जिन्हें ऋषि मिशन के लिए अग्नि-परीक्षा देने का गौरव प्राप्त है। इस घटना को मुखरित करना हमारा कर्त्तव्य है। कवियों को इस शूरवीर पर गीत लिखने चाहिये। वक्ता, उपदेशक, लेखक ठाकुर रघुनाथ को अपने व्याख्यानों व लेखों को समुचित महत्त्व देंगे तो जन-जन को प्रेरणा मिलेगी।

ठाकुर मुन्ना सिंहः- महर्षि के शिष्यों भक्तों की रमाबाई, प्रतापसिंह व मैक्समूलर के दीवानों ने ऐसी उपेक्षा करवा दी कि ठाकुर मुन्नासिंह आदि प्यारे ऋषि भक्तों का नाम तक आर्यसमाजी नहीं जानते। ऋषि के कई पत्रों में छलेसर के ठाकुर मुन्नासिंह जी की चर्चा है। महर्षि ने अपने साहित्य के प्रसार के लिए ठाकुर मुकन्दसिंह, मुन्नासिंह व भोपालसिंह जी का मुखत्यारे आम नियत किया। इनसे बड़ा ऋषि का प्यारा कौन होगा?

ऋषि के जीवन काल में उनके कुल में टंकारा में कई एक का निधन हुआ होगा। ऋषि ने किसी की मृत्यु पर शोकाकुल होकर कभी कुछ लिखा व कहा? केवल एक अपवाद मेरी दृष्टि में आया है। महर्षि ने आर्य पुरुष श्री मुन्नासिंह के निधन को आर्य जाति की क्षति मानकर संवेदना प्रकट की थी। श्री स्वामी जी का एक पत्र इसका प्रमाण है।

श्री महाराज के पत्र-व्यवहार की निर्देशिका बनाने का इस सेवक का अनुरोध इसी प्रयोजन से था कि विस्मृत पुण्यात्माओं का अनुस्मरण होता रहे।

एक करणीय कार्यः- डॉ. वसन्तजी का चित्र सभा को पहुँचा दिया है। उन पर लिखने बैठा ही था कि यह सूचना मिली कि परोपकारिणी सभा को माननीय श्री ओम्मुनि जी के सुपुत्र ने मुम्बई से एक उत्तम सुझाव भेजा है। सचमुच यह करणीय कार्य है, जो सभा ने अपने हाथ में लिया हैं। जिन्होंने दीर्घायु प्राप्त की, आजीवन समाज की सेवा की, उन आर्य संन्यासियों, विद्वानों, प्रचारकों, आर्य पुरुषों की सूची बनाई जावे। उनके परिवारों का पता किया जावे। वे अब समाज से कट चुके हैं अथवा जुड़े हैं ? पता चला कि उन्होंने तो शतवर्षीय आर्य पुरुषों की सूची बनाने का सुझाव दिया है। मैं चाहूँगा कि सौ वर्ष नहीं, अस्सी या पचासी वर्ष तक पहुँचे समाज सेवियों, यथा- पं. बस्तीराम, भीष्म स्वामी, स्वामी सर्वानन्दजी, आचार्य उदयवीर, श्री अमर स्वामी, श्री शोभाराम प्रेमी, पं. शान्तिप्रकाश, स्वामी सत्यप्रकाश, आचार्य श्री प्रियव्रत, गंगाप्रसाद द्वय, स्वामी बेधड़क, पं. हरिशरण, पं. बिहारीलाल शास्त्री, श्रद्धेय मीमांसक, महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी ज्ञानानन्द, स्वामी विज्ञानानन्द इत्यादि कोई छूटे नहीं। ऐसे वयोवृद्ध जो इस समय हमारे मध्य हैं, उनको भी ले लिया जावे। यथा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराष्ट्र, पं. ओम्प्रकाशजी वर्मा आदि। सब पर संक्षेप से कुछ लिखा भी जाये। केवल सूची बनाने का क्या लाभ? मैं तड़प-झड़प की इसी मणि से इसको आरम्भ करने का साहस करता हूँ। पाठकों को जँचेगा तो इस क्रम को बढ़ाया जायेगा।

पं. सुधाकर जी चतुर्वेदीः- कर्नाटक के आर्य विद्वान् पं. सुधाकर जी इस समय आर्य समाज ही नहीं देश के सबसे वयोवृद्ध वैदिक विद्वान् हैं। आप इस समय ११६-११८ वर्ष के होंगे। आप बाल ब्रह्मचारी हैं। कर्नाटक की राजधानी बैंगलूर में रहते हैं। चारों वेदों का अंग्रेजी व कन्नड़ दो भाषाओं में अनुवाद किया है। कन्नड़ में गद्य-पद्य दोनों में लिखा है। अंग्रेजी, हिन्दी में भी लिखते चले आ रहे हैं। इस विकलाङ्ग कृषकाय मेधावी आर्य विद्वान् ने स्वाधीनता संग्राम में भी भाग लिया। पेंशन लेना स्वीकार नहीं किया। सरदार पटेल भी स्वराज्य संग्राम में घायल होने पर अस्पताल में आपका पता करने पहुँचे थे।

आप श्रीमद्‌यानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर तथा गुरुकुल काँगड़ी में भी कुछ वर्ष तक रहे। स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी आदि महापुरुषों के चरणों में बैठने का, कुछ पाने का आपको गौरव प्राप्त है। सत्यार्थप्रकाश का कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया। बहुत कुछ लिखा है। एक बालक को गोद लिया।

आर्यमित्र नाम का वह मेधावी बालक कर्नाटक राज्य में उच्च सरकारी पदों पर आसीन रहा। वह कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा का भी प्रधान रहा। अनेक बार आपका अभिनन्दन हो चुका है। आर्य समाज श्रद्धानन्द भवन बैंगलूर की हीरक जयन्ती पर आपका अविस्मरणीय अभिनन्दन इसी लेखक की अध्यक्षता में हुआ था। लाहौर में उपदेशक विद्यालय में रहते हुए गुण्डों के आक्रमण में आप भी पं. नरेन्द्र जी के साथ घायल हुए थे। श्रवन शक्ति अब नहीं रही, तथापि धर्म प्रचार व साहित्य सृजन में सक्रिय हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिये कहा क्या था?:- दिल्ली से एक युवक ने चलभाष पर यह पूछा है कि यहाँ यह प्रचारित किया गया है कि डॉ. अम्बेडकर ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को दलितों का मसीहा बताया था। क्या डॉ. अम्बेडकर के यही शब्द थे? हमने तो आपके साहित्य में कुछ और ही शब्द पढ़े थे। मेरा निवेदन है कि मैंने जो कुछ लिखा है पढ़कर, मिलान करके लिखा है, परन्तु मैं आर्य समाज के इन तथाकथित सर्वज्ञ इतिहासकारों को इतिहास प्रदूषण करने से नहीं रोक सकता। इन्हें खुल खेलने की छूट है। डॉ. अम्बेडकर के शब्द हैं, स्वामी श्रद्धानन्द दलितों के सबसे बड़े हितैषी हैं। मराठवाडा में डॉ. अम्बेडकर विद्यापीठ में डॉ. अम्बेडकर के साहित्य के मर्मज्ञ किसी प्रोफैसर से पत्र-व्यवहार करके मेरे वाक्य की जाँच परख कर लीजिये। मेरी भूल होगी तो दण्ड का भागीदार हूँ।

वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१**

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

जमानी (इटारसी) त्रिदिवसीय कार्यक्रम

जमानी इटारसी रेल्वे स्टेशन म.प्र. से १४ कि.मी. दूरी पर स्थित आश्रम है जो ब्र. नन्दकिशोर जी द्वारा परोपकारिणी सभा अजमेर के अधीनस्थ किया जा चुका है। यह सुरम्य स्थान हरियाली से ओत-प्रोत घने पेड़-पौधों वाली १० एकड़ भूमि में स्थित है। इसका संचालन आचार्य सत्यप्रिय जी कर रहे हैं। उनके सम्पर्क सूत्र एवं लगनशील स्वभाव के कारण यह क्षेत्र लुभावना बन गया हैं। गऊशाला - लघु गऊशाला है। चार पाँच गायें आदि है। दूध आश्रम के लिए पर्याप्त है। यज्ञ- दिनांक १२ जनवरी से १४ जनवरी तक सामवेद पारायण यज्ञ, दैनिक यज्ञ संध्यादि का कार्यक्रम प्रात: सायं नियमित प्रतिदिन प्रात: ९ से ११.३० व सांय ४.३० से ५.३० तक चला। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सोमदेव जी एवं वेदपाठी आचार्य कर्मवीर जी रहे। मंत्रों का वाचन, मध्य में आवश्यक संदर्भ सहित व्याख्या मधुर वाणी में श्रोताओं के लिए विशेष रोचक रही। गणमान्य व्यक्ति समुदाय, स्कूल के बालक-बालिकाओं ने भी भाग लिया एवं यज्ञ की प्रक्रिया व महत्त्व को समझा।

प्रवचन व भजन- यज्ञ के बाद, मध्याह्न व रात्रि में प्रवचन व भजनों की शृंखला ने श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया। भजनोपदेशक प्रदीप जी, नन्दलाल जी और उपदेशक आचार्य सोमदेव जी, आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, स्वामी अमृतानन्द जी, स्वामी कृष्णानन्द जी होशंगाबाद थे। वहाँ बच्चों को जीवनोपयोगी उत्तम बातें बताई गईं।

ध्यान-योग-प्रतिदिन प्रात: ५.३० से ७.०० बजे तक स्वामी अमृतानन्द जी के नेतृत्व में योग व ध्यान का कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। यह नियमित तीन दिन चला। आई.जी. व उनकी धर्मपत्नी ने भी भाग लेकर अपनी ओर से विधि बताई।

नगर भ्रमण- जमानी में दिनांक १२ को मध्याह्न में २ बजे से ४.३० बजे तक शोभायात्रा निकली, उसमें यज्ञ करते हुये, वाद्यध्वनि, रथ में सवार स्वामी अमृतानन्द जी एवं आचार्य सोमदेव जी थे। स्थान-स्थान पर पुष्पवृष्टि से स्वागत किया गया। सभी लोगों में भारी उत्साह था। शोभायात्रा व हवन की प्रक्रिया से बहुत लोग प्रभावित हुए।

अजमेर, होशंगाबाद, छिन्दवाड़ा, नागपुर, हरदा आदि स्थानों के आर्यों ने भाग लेकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। चिंचोली, घाटली दुलरिया, तारनी आर्य समाजों ने भाग लिया।

अन्तिम दिन ग्राम वासियों को आश्रम की ओर से भोजन कराया गया। **- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग , अजमेर।**

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

पुनरुत्थान युग का द्रष्टा

- स्व. डॉ. रघुवंश

कीर्तिशेष डॉ. रघुवंश हिन्दी-जगत् के जाने-माने विद्वान् थे। वे हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी के परिपक्व ज्ञाता तो थे ही, भारत की शास्त्रीयता और उसके इतिहास के अनुशीलन में भी उनकी विपुल रुचि और गति थी। उन्होंने साहित्य के विभिन्न पक्षों पर साहित्य-सर्जन कर अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष और समर्थ लेखक के रूप में वे सर्वमान्य रहे। अपने अग्रज श्रीमान् यदुवंश सहाय द्वारा रचित 'महर्षि दयानन्द' नामक ग्रन्थ की भूमिका-रूप में लिखे गए उनके इस लेख से हमारे ऋषिभक्त पाठक लाभान्वित हों, अत: इसे हम उक्त ग्रन्थ से साभार उद्धृत कर रहे हैं। **- सम्पादक**

पिछले अंक का शेष भाग.....

दयानन्द ने वेदों के प्रामाण्य पर ही यह घोषित किया कि जो हमारे विवेक को स्वीकार्य नहीं, उसके त्याग में हमको एक क्षण का विलम्ब नहीं करना चाहिए। यदि वेदों में ज्ञान के बदले अज्ञान है, मानवीय उच्च मूल्यों के बजाय घोर हिंसा-वृत्ति, भोगवाद और स्वार्थ की उपासना है, तो उनको अस्वीकार कर देना चाहिए। उनके प्रामाण्य से क्या प्रयोजन? पर उन्होंने गुरु के द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चल कर वेदों की व्याख्या के लिए आर्ष व्याकरण ग्रन्थों का मन्थन किया। उन्होंने निघण्टु, निरुक्त, अष्टाध्यायी और महाभाष्य जैसे व्याकरण ग्रन्थों के आश्रय से वेद-मन्त्रों की सुसंगत और व्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत की। इस दृष्टि से गहन अध्ययन करने के बाद उन्होंने घोषित किया कि वेद, वैदिक साहित्य और अन्य आर्ष ग्रन्थ ही प्रामाण्य हैं, उनमें सत्य-ज्ञान सुरक्षित है, उनमें भारतीय संस्कृति के उच्चतम मूल्य सुरक्षित हैं और ये मूल्य भारतीय समाज और व्यक्ति के जीवन के सभी पक्षों को मौलिक सर्जनशीलता से गतिशील करने में सक्षम रहे हैं। इन ग्रन्थों में कहीं कोई विरोधाभास नहीं है, असंगतियाँ नहीं हैं। आवश्यकता है कि वेदों का अर्थ साधारण लौकिक व्याकरणों की पद्धति से न लगा कर, निघण्टु तथा निरुक्त आदि की यौगिक पद्धति से लगाया जाय। दयानन्द ने स्वयं इस पद्धति का स्वरूप प्रतिपादित किया और अपने समय के समस्त विद्वानों का आह्वान किया कि वे उनसे इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय करें। उनके तर्कों में बड़ा बल था, वे अकाट्य थे, उनकी पद्धति शास्त्रों के गहन-मन्थन पर आश्रित थी, उन्होंने अपना आधार शुद्ध विवेक माना था। यद्यपि उनकी बात को कोई काट नहीं सका और महर्षि अरविन्द के अनुसार उन्होंने वेदों के मूल अर्थ तक पहुँचने की एक सही पद्धति निरूपित की है, किन्तु पश्चिमी प्रभाव से आधुनिक शिक्षितों ने और अपने स्वार्थवश परम्परावादियों ने उनकी व्याख्या-पद्धति को अधिक गम्भीरता से लेने का वातावरण नहीं बनने दिया। परन्तु **आज भी उनके उठाये हुए प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है और वेदों के सत्य को उद्घाटित करने और ज्ञान को प्रकाशित करने की कोई अन्य एवं इतनी उपयुक्त पद्धति नहीं है।**

स्वामी दयानन्द ने भारतीय समाज में व्याप्त निष्क्रियता, अन्धविश्वास और स्वार्थपरता के मूल में मध्ययुग के पुराणपंथ को माना है। यह धर्म पलायनवादी है। पलायनवादी मनोवृत्ति मनुष्य को आत्मकेन्द्रित, असामाजिक और स्वार्थपरायण बनाती है। दयानन्द के अनुसार वैदिक धर्म परम ब्रह्म परमेश्वर की उपासना का विधान है, परन्तु पुराणपंथियों ने उसके स्थान पर अनेकेश्वरवाद, अवतारवाद, मूर्तिपूजा, देवी-देवताओं की पूजा और यहाँ तक कि अपदेवताओं तक की पूजा प्रचलित करके अपना स्वार्थ सिद्ध किया। वेद-समर्थित समाज में चार वर्णों की व्याख्या है, और यह व्यवस्था कर्म के आधार पर थी। इन वर्णों में ऊँच-नीच तथा छुआछूत का अन्तर नहीं था। **ब्राह्मण को सम्मान उसकी त्याग और सेवावृत्ति के कारण प्राप्त था। क्योंकि वह नि:स्वार्थ भाव से ज्ञान-साधना में लगा रहता था, समाज के नैतिक जीवन का संरक्षक था और समाज के अन्य अंगों में अपने विवेक से सन्तुलन बनाये रखता था, अत: उसे अन्यों का आदर भाव प्राप्त था।** पौराणिकों ने वर्ण व्यवस्था को जन्मना स्वीकार करके घोर अनर्थ किया और समाज की सारी गत्यात्मक क्षमता को कुंठित कर दिया। उनमें ऊँच-नीच और छुआछूत का भाव

भरकर मनुष्य मात्र की बराबरी की वैदिक भावना को नष्ट कर दिया। वेदों में तो प्राणी मात्र को नश्वर तथा सम्माननीय माना है। **इस ऊँच-नीच के चक्र ने सारे समाज को सहस्रों जाति-पाँतियों में विभक्त कर छिन्न-भिन्न कर दिया।**

वेदों में व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों की सुन्दरतम कल्पना है। व्यक्ति का विकास सामाजिक दायित्व को पूरा करने की प्रक्रिया में माना गया है। व्यक्ति के जीवन को चार आश्रमों में इसी दृष्टि से विभक्त किया गया है। प्रथम आश्रम की कल्पना में व्यक्ति के विकास की पूरी सम्भावना है। शारीरिक, मानसिक और नैतिक शक्ति संगृहीत करने के लिये इस आश्रम में व्यक्ति समाज की पूरी सहायता और संरक्षण प्राप्त करता है। गृहस्थाश्रम में व्यक्ति पारिवारिक जीवन का दायित्व ग्रहण करता और इस सीमा में वह समाज के प्रति अपना दायित्व पारिवारिक दायित्वों को निभाते हुए ही पूरा कर सकता है। वानप्रस्थ आश्रम में व्यक्ति पारिवारिक बन्धनों से मुक्त होकर **पूर्ण सामाजिक दायित्व** का वहन करता है। समाज के विकास के लिए वह हर सेवा के लिए प्रस्तुत रहता है। अन्त में संन्यास आश्रम में व्यक्ति अपनी निजी आध्यात्मिक उपलब्धियों की ओर प्रवृत्त होता है और समाज के आध्यात्मिक जीवन के उन्नयन का दायित्व वहन करता है। इस प्रकार वैदिक आश्रमों की कल्पना व्यक्ति और समाज के आन्तरिक सम्बन्धों की ऐसी व्यवस्था है, जिसमें व्यक्ति की उन्नति और समाज के विकास की पूरी संभावना रक्षित है। इसी प्रकार विभिन्न ऋणों की कल्पना में भी व्यक्ति और समाज के सन्तुलन का दृष्टिकोण सुरक्षित है। **व्यक्ति अपने विकास में समाज से पाता है, अतः उसे समाज को चुकाना भी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति पर स्वस्थ वंश-परम्परा चलाने, ज्ञान की परम्परा को आगे बढ़ाने, प्राणिमात्र की सेवा और सहायता करने तथा आध्यात्मिक जीवन को अग्रसर करने का दायित्व है।** इन दायित्वों को पूरा किए बिना कोई व्यक्ति मुक्त हो नहीं सकता।

वेदों में समत्व की भावना प्राणिमात्र की बराबरी में विकसित हुई है। नारियों को नरक का द्वार, माया, ज्ञान की अनधिकारिणी और ताड़ना की अधिकारिणी आदि पौराणिकों ने माना है। यह ह्रासोन्मुखी मध्ययुगीन समाज का लक्षण है, व्यक्तिपरक वैराग्यमूलक साधनाओं की दृष्टि से कहा गया है। वेदों में नारी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है, पुरुष के समकक्ष तो वे हैं ही। उनको वेदादि के ज्ञान प्राप्त करने का पुरुषों के समान ही अधिकार है। ज्ञानस्वरूप वेद ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार सबको प्रदान करते हैं। वेद में समाज और समत्व की परिव्याप्ति है। वहाँ व्यक्तिगत उन्नति, यहाँ तक कि आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग भी सामाजिक और नैतिक मूल्यों की उपलब्धि से होकर जाता है। व्यक्ति सामाजिक दायित्वों को पूरा करते हुए ही अपनी आत्मा के विकास में प्रवृत्त हो सकता है। इसी प्रकार वैदिक कर्मवाद शुद्ध कर्म की प्रेरणा और कर्म के सत् और असत् विचार पर प्रतिष्ठित है। मनुष्य की मुक्ति सत्कर्मों पर निर्भर है। कर्मों का परिणाम भोगना ही है, जन्मान्तर तक कर्म के इस बन्धन में जीव को रहना पड़ता है। आगे चल कर **कर्म-फल का भावी-भवितव्यता आदि में पर्यवसान पुराणपंथियों के कारण हुआ।** मध्ययुग में कर्म का बन्धन ढीला पड़ गया। ईश्वर के कृपालु, भक्तवत्सल होने का अर्थ लगाया गया कि पापी से पापी व्यक्ति ईश्वर की शरण में चले जाने पर अपने कर्मबन्धन से मुक्त हो जाता है। यह समाज की व्यवस्था और ईश्वरीय विधान की दृष्टि से घातक परिकल्पना है।

दयानन्द ने मध्ययुग के व्यक्तिपरक धर्म, दर्शन, साधना तथा अध्यात्म को पुनः वैदिक समाजपरक आधार पर प्रतिष्ठित किया। मध्ययुगीन अद्वैत तथा अद्वैत आधारित दर्शनों को अस्वीकार कर उन्होंने वैदिक द्वैतवाद की स्थापना की। एक परम ब्रह्म परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त, शाश्वत, अनादि, अनन्त सत्य स्वरूप है। वह समस्त मानवीय गुणों का, परम मूल्यों का चरम स्थल है-दया, न्याय और करुणा आदि का। वह हम जीवों का परम पिता है और पालन-पोषण-संरक्षण करने वाला है। वस्तुतः इस प्रकार की अवधारणा में व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों का सुन्दर स्वरूप सुरक्षित है। इसी कारण दयानन्द ने ज्ञान और भक्ति के सूक्ष्म चिन्तन और अनुभव के स्तर पर विकसित होने वाले आत्मा तथा ब्रह्म के अद्वैतपरक भेदाभेद को महत्त्व नहीं दिया, वरन् उसे अस्वीकार किया है, क्योंकि इस प्रकार का दार्शनिक चिन्तन जिस प्रकार की आध्यात्मिक साधना को प्रेरित करता है, वह व्यक्ति सापेक्ष और समाज निरपेक्ष है। जैसा उल्लेख किया गया है, दयानन्द का दृष्टिकोण

भारतीय समाज को स्वस्थ और सन्तुलित आधार प्रदान करना था। उनके मन में ऐसे समाज की परिकल्पना थी जो शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक क्षमता, बौद्धिक विवेक, नैतिक दायित्व भावना व सामाजिक समत्व भाव से सम्पन्न हो, इसीलिए उन्होंने मध्ययुगीन धर्म, साधना, दर्शन, समाजनीति, राजनीति तथा अर्थनीति का डट कर विरोध किया है। वे हर प्रकार की सामाजिक, धार्मिक तथा वैयक्तिक एकांगिता के विरोधी थे। पौराणिकों ने आध्यात्मिकता के नाम पर समस्त भारतीय समाज में **भावावेशपूर्ण भक्ति, रहस्यमयी साधनाओं** और जड़ मूर्तिपूजा का प्रचार किया था। समाज, जाति तथा राष्ट्र के राम तथा कृष्ण जैसे महान् नेताओं को अवतार मान कर उनके चारों ओर भक्ति और लीला का ऐसा वातावरण बनाया गया था, जो व्यक्ति को व्यापक सामाजिक मूल्यों तथा दायित्वों के प्रति निरपेक्ष बनाता है। दयानन्द ने इस मध्ययुगीन वातावरण को छिन्न-भिन्न करके भारतीय जीवन को नयी प्राण-शक्ति और प्रेरणा प्रदान करने का अथक प्रयत्न किया।

स्वामी दयानन्द क्रान्तिकारी द्रष्टा थे। **वे समन्वयवादी समाज-सुधारक नहीं थे।** पुनरुत्थान काल के अन्य सभी नेताओं ने समन्वय का सहारा लिया है। उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशेषता मानी है कि वह समन्वयशील है। इस दृष्टि से उन्होंने सम्पूर्ण भारतीय परम्परा को स्वीकार कर अपना समर्थन दिया है। ज्ञान से भक्ति का समन्वय, इनसे कर्म का समन्वय, वेदों से पुराणों तक का समन्वय, सभी विचार-धाराओं का समन्वय, सभी धर्मों का समन्वय, सभी सांस्कृतिक परम्पराओं का समन्वय, और अन्ततः पूर्व से पश्चिम का समन्वय....इस अध्यवसाय में उनका अधिकांश श्रम लगा। उनका विचार था कि इस प्रकार हम भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रख सकेंगे और पश्चिमी संस्कृति के आधार पर आधुनिक युग में विकास करने का मौका भी पा सकेंगे । **परन्तु दयानन्द की क्रान्तिकारी दृष्टि में यह समन्वय सत्य को लेकर समझौता करने की मनोवृत्ति का परिचायक है** और इस मनोवृत्ति से कोई भी समाज न गतिशील हो सकता है और न सर्जनात्मक ही। समन्वय यदि समझौता है, दो विचारों, मूल्यों अथवा परम्पराओं की मिलावट है, तो वह हेय ही नहीं, किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की व्यक्तित्वहीनता का परिचायक भी है। दो विचार, दो मत अथवा दो संस्कृतियाँ एक-दूसरे के लिए चुनौती रूप में उपस्थित होती हैं और इन चुनौतियों को स्वीकार करने की प्रक्रिया में उनमें नया संस्कार आता है, नई गति आती है और अन्ततः उनका नया सर्जनात्मक रूप व्यक्त होता है। यह एक स्वस्थ प्रक्रिया है। दयानन्द ने इसी स्तर पर और इसी रूप में चुनौतियों को स्वीकार किया है। निश्चय ही वेद उनके लिए आश्रय-स्थल रहे हैं, पर वेद के सत्य-ज्ञान की समस्त परिकल्पना उन्होंने भारतीय समाज की पुनर्रचना और गत्यात्मक क्षमता की दृष्टि से ही स्वीकार की।

उन्होंने स्पष्टतः अनुभव किया कि जब तक मध्ययुगीन मूल्यों, स्थापनाओं, मान्यताओं, जीवन-पद्धतियों और परम्पराओं का खुला विरोध नहीं किया जायगा और भारतीय समाज को इनकी कुंठाओं, जड़ताओं और स्वार्थपरताओं से पूर्णतः मुक्त नहीं किया जायगा, इस समाज के पुनर्जीवित होने और फिर से मौलिक सर्जनशीलता से गतिशील होने का कोई अवसर नहीं है। इसी कारण उन्होंने इन सब पर कस कर प्रहार किया है और इसमें उन्होंने कभी किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं किया। **इस क्रान्तिकारी व्यक्तित्व ने अपने सत्य को लेकर किसी बड़ी से बड़ी शक्ति से भय, लोभ, आतंक वश कभी समझौता नहीं किया। उनका एक ही उत्तर था- असत्य से समझौता करके सत्य का प्रकाश करना कभी संभव नहीं है।** वस्तुतः अपनी गहरी अन्तर्दृष्टि से उन्होंने समझ लिया था कि विजड़ित और कुंठित परम्परा से मुक्त होने का एकमात्र उपाय है उसको तोड़ कर फेंक देना। स्वामी दयानन्द यह भी समझते थे कि कोई भी प्राचीन संस्कृति की परम्परा से जुड़ा हुआ समाज अपने अन्तर्वर्ती ऐतिहासिक-सांस्कृतिक व्यक्तित्व से नितान्त विच्छिन्न होकर गतिशील नहीं हो सकता, वह नये मूल्यों की उपलब्धि में सक्षम नहीं हो सकता। इस दृष्टि से उन्होंने नई समाज-रचना के लिए, नये मानस के संघटन के लिए और नई सर्जन-क्षमता से सक्रिय होने के लिए भारतीय व्यक्तित्व को वैदिक संस्कृति के आधार पर प्रतिष्ठित किया है। कुछ आधुनिकतावादी इसको प्राचीन के प्रति उन्मुखता मानते हैं, अथवा पीछे वापस जाना कहते हैं, परन्तु दयानन्द की क्रान्तिकारिता को देखते हुए यह कहना गलत है। उन्होंने वेदों के प्रामाण्य का

आधार विवेकसंगत ही ग्रहण किया है। वेद उनके लिए अपौरुषेय तथा परम सत्य-ज्ञान के स्रोत इसलिए नहीं है कि यह मात्र आस्था का विषय है, वरन् परम सत्य को विवेक ज्ञान तथा आत्मसाक्षात्कार के स्तर पर ग्रहण किया जा सकता है। वेदों के स्वत: प्रमाण होने का भी यही अर्थ माना गया है कि उनमें जिस सत्य ज्ञान की अभिव्यक्ति है, वह सहज ही सब के लिए समान रूप से ग्राह्य है, वह सार्वभौम और सार्वकालिक है, उसके बारे में युग की मर्यादा के महत्त्व अथवा समाज की सापेक्षता के बन्धन की चर्चा नहीं की जा सकती।

ध्यान देने की बात है कि **वैदिक संस्कृति की व्याख्या के माध्यम से स्वामी दयानन्द ने जिन मानव मूल्यों की स्थापना की है, वे भारतीय समाज की आधुनिक प्रगति तथा रचना दृष्टि के अनुकूल हैं।** ऐसा लग सकता है कि आधुनिक समाज-रचना और उसकी प्रगति की समस्त दिशाओं तथा सम्भावनाओं को निरूपित, व्याख्यायित तथा प्रतिष्ठित करने वाले मूल्यों को वेदों में ढूँढ़ने का प्रयत्न अतिवाद है। फैशनपरस्त आधुनिकतावादी दयानन्द पर इस प्रकार का आक्षेप लगाते रहे हैं कि उन्होंने वेदों में आज के वैज्ञानिक आविष्कारों को खोज निकालने की चेष्टा की है। यह इसी प्रकार का आक्षेप है, जैसे तथाकथित विज्ञानवादी गाँधी पर आरोप लगाते हैं कि वे बैलगाड़ी के पक्षधर थे। वस्तुत: दयानन्द ने सदा इस बात पर बल दिया है कि वेदों का दृष्टिकोण सत्य के वैज्ञानिक अन्वेषण का रहा है। वेद-काल के मनीषियों ने भौतिक जीवन की उपेक्षा करके आध्यात्मिक जीवन के विकास पर कभी बल नहीं दिया था। उन्होंने भौतिक जीवन के सत्यों के अनुसन्धान में वैसी ही प्रवृत्ति दिखाई है, जैसी आत्मिक सत्यों के आत्मानुभव के स्तरों की खोज की। सत्य का यह समस्त अनुसन्धान ज्ञान के प्रत्यक्ष अनुभव, विवेकशील चिन्तन और आत्मसाक्षात्कार के आधार पर हुआ है, अत: वे इसे वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं। प्रत्यक्ष जीवन के अनुभवों के आधार पर ज्ञान की खोज में प्रवृत्त होने के कारण इन मनीषियों ने अनेक भौतिक सत्यों की खोज भी की थी। परन्तु जहाँ तक आधुनिक विज्ञान का प्रश्न है, स्वामी दयानन्द का ध्यान उसकी ओर गया था और वे बहुत चाहते थे कि जर्मनी जाकर हमारे विद्यार्थी इस आधुनिक विज्ञान का समुचित अध्ययन करें और वापस आकर उसका प्रचार अपने देश में करें। उनके अनुसार इस आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में बिना अधिकार प्राप्त किये कोई देश या समाज आज उन्नति नहीं कर सकता।

शेष भाग अगले अंक में.....

परोपकारी के सम्बन्ध में घोषणा

प्रकाशन – परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर

संपादक	–	धर्मवीर	**मुद्रक का नाम**	–	श्री मोहनलाल तँवर,
नागरिकता	–	भारतीय	**पता**	–	वैदिक यन्त्रालय,
पता	–	केसरगंज, अजमेर			केसरगंज, अजमेर
प्रकाशक	–	धर्मवीर	**प्रकाशन अवधि**	–	पाक्षिक
नागरिकता	–	भारतीय			
पता	–	कार्यकारी प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर			

मैं, धर्मवीर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है।

फरवरी २०१६ **प्रकाशक : धर्मवीर**

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

अथ सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम्

- शिवनारायण उपाध्याय

वैदिक वाङ्मय में इस विषय पर कई स्थानों पर विचार किया गया है। ऋग्वेद, मुण्डक उपनिषद्, तैत्तिरीय उपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, छान्दोग्य उपनिषद् तथा बृहदारण्यक उपनिषद् में इस विषय पर विस्तार से विचार किया गया है। इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर मैं भी इस विषय पर पूर्व में छः लेख लिख चुका हूँ। एक बार पुनः इसी विषय को लिखने का उपक्रम इसलिए करना पड़ रहा है कि आर्य समाज के ही प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती आन्ध्र प्रदेश ने माह जून २०१५ में 'वैदिक पथ' पत्रिका में एक लेख प्रकाशित करवाया है, जिसमें सृष्टि की आयु के स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्णय का विरोध किया है।

सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में विज्ञान का मानना तो यह है कि सृष्टि की उत्पत्ति Big Bang (भयंकर विस्फोट) के साथ ही प्रारम्भ हुई और परिवर्तन के कई चरणों से गुजरती हुई वर्तमान स्थिति में पहुँची है। Big Bang के साथ ही आकाश और समय का कार्य प्रारम्भ हुआ। सृष्टि उत्पत्ति का क्रम इस प्रकार रहा- आकाश, ज्वलनशील वायु, अग्नि, जल और निहारिका का मण्डल। निहारिका मण्डल में ही सौर मण्डलों ने स्थान पाया। पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य से छिटक कर अलग होने के बाद धीरे-धीरे परिवर्तित होकर वर्तमान रूप में हुई। श्वास लेने योग्य वायु के बनने, पानी के पीने योग्य होने पर पानी के अन्दर सर्वप्रथम जलचरों को जीवन मिला। फिर क्रमशः जल-स्थल चर, स्थल चर और आकाश चर प्राणियों की उत्पत्ति हुई। सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व क्या था? इस विषय में विज्ञान का कहना है कि Big Bang के बाद ही सृष्टि नियम विकसित हुए हैं और उनके आधार पर हम घोषित कर सकते हैं कि भविष्य में कब क्या होगा और वे घोषणाएँ सब सत्य सिद्ध हो रही हैं, अतः हमें Big Bang के पूर्व की स्थिति को जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके अज्ञान से हमारे वैज्ञानिक कार्य पर कोई भी प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। अस्तु।

वैज्ञानिक विचारधारा पर संक्षेप में वर्णन कर देने के उपरान्त अब हम इस विषय पर वैदिक वाङ्मय के विचार पाठकों के सामने रखने का प्रयास कर रहे हैं। वैदिक वाङ्मय में सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व की स्थिति का वर्णन भी किया गया है। पाठकों के लिए नासदीय सूक्त के मन्त्र दिये जा रहे हैं-

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमाऽपरोयत्।
किमावरीवः कुहकस्य शर्म्मन्नभः किमासीद्गहनं गभीरम्।।

-ऋग्वेद १०.१२९.१

अर्थ- (नासदासीत्) जब यह कार्य सृष्टि उत्पन्न नहीं हुई थी, तब एक सर्वशक्तिमान् परमेश्वर और दूसरा जगत् का कारण विद्यमान था। असत् शून्य नाम आकाश भी उस समय नहीं था क्योंकि उस समय उसका व्यवहार नहीं था। (ना सदासीत्तदानीम्) उस काल में सत् अर्थात् सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण मिला कर जो प्रधान कहाता है, वह भी नहीं था। (नासीद्रजः) उस समय परमाणु भी नहीं थे तथा (नो व्योमाऽपरोयत्) विराट अर्थात् जो सब स्थूल जगत् के निवास का स्थान है, वह (आकाश) भी नहीं था। (किमावरीव.....गभीरम्) जो यह वर्तमान जगत् है, वह भी अत्यन्त शुद्ध ब्रह्म को नहीं ढँक सकता है और उससे अधिक वा अथाह भी नहीं हो सकता है, जैसे कोहरे का जल पृथ्वी को नहीं ढँक सकता है तथा उस जल से नदी में प्रवाह नहीं आ सकता है और न वह कभी गहरा अथवा उथला हो सकता है।

तम आसीत्तमसा गुलमग्रेऽप्रकेतं सलितं सर्वमा इदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यवासीत्तपसस्तन्माहिना जायतैकम्।।

- ऋ. १०.१२९.३

अर्थ- उस समय यह जगत् अन्धकार से आवृत, रात्रिरूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एक देशी आच्छादित तथा पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारण रूप से कार्य रूप में कर दिया।

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास।।

- ऋ. १०.१२९.२

सृष्टि के पूर्व प्रलयकाल में मृत्यु नहीं थी, मृत्यु के अभाव में अमरता भी नहीं थी। न मारक शक्ति के विपरीत अमृत अथवा सब जीव मुक्तावस्था में थे, ऐसा भी नहीं कह सकते। रात्रि एवं दिन का प्रज्ञान भी नहीं था। उस समय केवल वायु की अपेक्षा न रखने वाला सदा जाग्रत

ब्रह्म ही था। उस समय उससे भिन्न, उसके समान अथवा उससे अधिक कुछ भी नहीं था। प्रकृति ऊर्जारूप में परिवर्तित होकर अव्यक्त थी।

फिर सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई, इस पर तैत्तिरीय उपनिषद् का कहना है–

'सो कामयत। बहुस्यां प्रजायेयेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा इदं सर्वमसृजत। यदिद किञ्च। तत सृष्टावा तदेवानु प्राविशत्। तदनुप्रविश्य। सच्चत्यच्यामवत्। निरुक्तं चानिरुक्तं च। निलयन चानिलयन च। विज्ञानं चापिज्ञानं च। सत्यं चानृतं च। सत्यमभवत। यदिद किञ्च। तत्सत्यमित्या चक्षते।

–तै.उप. ब्रह्मानन्दवल्ली अनुवाक ६

अर्थ– उसने कामना की कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ, तब उसने तप किया। क्रिया का प्रारम्भ हो गया। जब यह क्रिया बढ़ते–बढ़ते उग्र रूप में पहुँची, तब उसे तप कहा गया। तप के प्रभाव से यह सब विश्व सृजा गया। सबकी सृष्टि करके वह ब्रह्म सृष्टि में अनुप्रविष्ट हो गया। आगे विपरीत कणों का वर्णन भी किया गया है–

सत्व रजस्तमसा साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महतोऽहंकारोऽहंकारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं पञ्चतन्मात्रेभ्यः स्थूल भूतानि पुरुष इति पञ्च विंशतिर्गण।।

अर्थ– सत्व, रज और तम रूप शक्तियाँ हैं। इन शक्ति रूपों की समावस्था, निश्चेष्ठावस्था प्रकट रूपावस्था को प्रकृति कहते हैं। प्रकृति से अहंकार, अहंकार से पाँच तन्मात्राएँ तथा पञ्च तन्मात्राओं से पाँच स्थूल भूत, स्थूल भूतों से पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ तथा मन उत्पन्न होता है। पुरुष (चेतन सत्ता) इनसे भिन्न हैं। इन २५ पदार्थों को जानना, समझना विवेक में आवश्यक है।

ऋग्वेद में सृष्टि उत्पत्ति परमेश्वर ने इस प्रकार की है–

ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मारइवाधमत्।
देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सद जायत।।

– ऋ. १०.७२.२

प्रकृति और ब्रह्माण्ड के स्वामी परमेश्वर ने दिव्य पदार्थों के परमाणुओं को लोहार के समान धोंका, अर्थात् ताप से तप्त किया है। वास्तव में इसी को वैज्ञानिकों ने भयंकर विस्फोट Big Bang कहा है। इन दिव्य पदार्थों के पूर्व युग, अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में अव्यक्त (असत्) प्रकृति से (सत्) व्यक्त जगत् उत्पन्न किया गया है। तैत्तिरीयोपनिषद् ब्रह्मानन्द वल्ली के प्रथम अनुवाक में सृष्टि उत्पत्ति का क्रम भी बताया गया है–

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधय। ओषधीभ्योऽन्नम् अन्नाद् रेतः। रेतसः पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः।।

अर्थात् परम पुरुष परमात्मा से पहले आकाश, फिर वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी उत्पन्न हुई है। पृथ्वी से ओषधियाँ, (अन्न व फल फूल) ओषधियों से वीर्य और वीर्य से पुरुष उत्पन्न हुए, इसलिए पुरुष अन्न रसमय है।

पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य में से छिटक कर हुई है, इस पर कहा गया है–

भूर्जज्ञ उत्तानपदो भुव आशा अजायन्त।
अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाद्वदितिः परि।।

– ऋ. १०.७२.४

अर्थ– पृथ्वी सूर्य से उत्पन्न होती है। पृथ्वी से पृथ्वी की दशा को बताने वाले भेद उत्पन्न होते हैं। प्रातः कालीन उषा से आदित्य उत्पन्न होता है, अर्थात् दृष्टि गोचर होता है और सांय कालीन उषा आदित्य से उत्पन्न होती है।

सृष्टि उत्पत्ति पर विचार कर लेने पर अब सृष्टि की वर्तमान आयु पर विचार करते हैं। वर्तमान में सृष्टि का वर्णन Friedmann Model के अनुसार किया जाता है। इसमें Big Bang के साथ ही आकाश–समय निरन्तरता का जन्म हो जाता है, अर्थात् समय की गणना Big Bang के प्रारम्भ होने के साथ ही शुरू हो जाती है। एक अमेरिकन वैज्ञानिक Edwin Hubble ने ९ विभिन्न आकाश गंगाओं (Galaxies) की दूरी जानने का प्रयत्न किया। उसने बताया कि हमारी आकाश गंगा तो अत्यन्त छोटी है, ऐसी तो करोड़ों आकाश गंगाएँ हैं। साथ ही उसने यह भी बताया कि जो (Galaxy) हमसे जितना अधिक दूर है, उतनी ही अधिक तेजी से वह हमसे दूर भागती जा रही है। उसने उनकी हमसे दूर होने की चाल की गति भी ज्ञात कर ली। फिर इस सिद्धान्त पर भी Big Bang के समय तो सब एक ही स्थान पर थे। उन्हें इतना दूर जाने में कितना समय लगा, उसका एक नियम भी खोज लिया।

नियम है– V=HR. यहाँ V आकाश गंगा की हमसे दूर भागने की गति है, R आकाश गंगा की हमसे दूरी है और H Constant है। Edwin Hubble ने यह भी ज्ञात किया कि कोई भी आकाश गंगा जो हमसे d दश लाख प्रकाश वर्ष की दूरी पर है, उसकी दूर हटने की

गति 19d मील प्रति सैकण्ड है। अत: अब समय $R=१०^{६}$ d प्रकाश वर्ष, $T=१०^{६}×३६५×२४×३६००×१८६०००d$ वर्ष

$१९^{d}×३६००×२४×३६५$

$=१८६×१०^{९}=९.७×१०^{९}$ वर्ष

१९

Saint Augustine ने अपनी पुस्तक The City of God में बताया कि उत्पत्ति की पुस्तक के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति ईसा से ५०० वर्ष पूर्व हुई है।

बिशप उशर का मानना है कि सृष्टि की उत्पत्ति ईसा से ४००४ वर्ष पूर्व हुई है और केम्ब्रीज विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. लाइटफुट ने सृष्टि उत्पत्ति का समय २३ अक्टूबर ४००४ ईसा पूर्व प्रात: ९ बजे बताया है जो हास्यास्पद है। अब हम वैदिक वाङ्मय के आधार पर सृष्टि की आयु पर विचार करते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के दूसरे अध्याय अथ वेदोत्पत्ति विषय में इस पर विचार किया है कि वेद की उत्पत्ति कब हुई? इससे यह मानना चाहिए कि सृष्टि में मानव की उत्पत्ति कब हुई, क्योंकि मानव के उत्पन्न होने पर ही तो वेद का ज्ञान उसे प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व की स्थिति अर्थात् सृष्टि उत्पन्न होने के प्रारम्भ से मानव के उत्पन्न होने के समय पर उन्होंने अपने विचार देना उचित नहीं समझा। वास्तव में मनुष्य ने तो अपने उत्पन्न होने के बाद ही समय की गणना प्रारम्भ की है। सृष्टि के उस समय की गणना वह कैसे करता, जब बन ही रही थी? वह कैसे जानता कि सृष्टि उत्पन्न होने की क्रिया के प्रारम्भ होने से उसके पूर्ण होने तक सृष्टि निर्माण में कितना समय व्यतीत हुआ है? इस पर फिर चर्चा करेंगे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी गणना में मनुस्मृति के श्लोकों को ही मुख्य रूप से काम में लिया है-

अत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तत्कृतं युगम्।
तस्य यावच्छतो सन्ध्या सन्ध्यांशश्च तथा विधः।।

-मनु. १.६९

उन दैवीयुग में (जिनमें दिन-रात का वर्णन है) चार हजार दिव्य वर्ष का एक सतयुग कहा है। इस सतयुग की जितने दिव्य वर्ष की अर्थात् ४०० वर्ष की सन्ध्या होती है और उतने ही वर्षों की अर्थात् ४०० वर्षों का सन्ध्यांश का समय होता है।

इतंरेषु ससन्ध्येषु ससध्यांशेषु च त्रिषु।
एकापायेन वर्त्तन्ते सहस्राणि शतानि च।।

-मनु. १.७०

और अन्य तीन-त्रेता, द्वापर और कलियुग में सन्ध्या नामक कालों में तथा सन्ध्यांश नामक कालों में क्रमशः एक-एक हजार और एक-एक सौ कम कर ले तो उनका अपना-अपना काल परिणाम आ जाता है।

इस गणना के आधार पर सतयुग ४८०० देव वर्ष, त्रेतायुग ३६०० देव वर्ष, द्वापर २४०० वर्ष तथा कलियुग १२०० देव वर्ष के होते हैं। इस चारों का योग अर्थात् एक चतुर्युगी १२००० देव वर्ष का होता है।

दैविकानाम युगानां तु सहस्रं परि संख्यया।
ब्राह्ममेकमहर्ज्ञेयं तावतीं रात्रि मेव च।। - मनु. १.७२

देव युगों को १००० से गुण करने पर जो काल परिणाम निकलता है, वह ब्रह्म का एक दिन और उतने ही वर्षों की एक रात समझना चाहिए। यह ध्यान रहे कि एक देव वर्ष ३६० मानव वर्षों के बराबर होता है।

तद्वै युग सहस्रान्तं ब्राह्मं पुण्यमहर्विदुः।
रात्रिं च तावतीमेव तेऽहोरात्रविदोजनाः।। मनु. १.७३

जो लोग उस एक हजार दिव्य युगों के परमात्मा के पवित्र दिन को और उतने की युगों की परमात्मा की रात्रि समझते हैं, वे ही वास्तव में दिन-रात= सृष्टि उत्पत्ति और प्रलय काल के विज्ञान के वेत्ता लोग हैं।

इस आधार की सृष्टि की आयु = १२०००×१००० देव वर्ष = १२०००००० देव वर्ष

१२००००००×३६० = ४३२००००००० देव वर्ष

१२०००००० देव वर्ष = ४३२००००००० मानव वर्ष

यत् प्राग्द्वादशसाहस्रमुदितं दैविक युगम्।
तदेक सप्ततिगुणं मन्वन्तरमिहोच्यते।। -मनु. १.७९

पहले श्लोकों में जो बारह हजार दिव्य वर्षों का एक दैव युग कहा है, इससे ७१ (इकहत्तर) गुना समय अर्थात् १२०००×७१ = ८५२००० दिव्य वर्षों का अथवा ८५२०००×३६०= ३०६७२०००० वर्षों का एक मन्वन्तर का काल परिणाम गिना गया है।

फिर अगले श्लोक में कहा गया है कि वह महान् परमात्मा असंख्य मन्वन्तरों को, सृष्टि उत्पत्ति और प्रलय को बार-बार करता रहता है, अर्थात् सृष्टि प्रवाह से अनादि है।

फिर स्वामी दयानन्द सरस्वती संकल्प मन्त्र के आधार पर वेद का उत्पत्ति काल बताते हैं।

ओ३म् तत्सत् श्री ब्रह्मणः द्वितीये प्रहरोत्तरार्द्धे

वैवस्वते मन्वन्तरेऽअष्टाविंशतितमे कलियुगे कलियुग प्रथम चरणेऽमुकसंवत्सरायमनर्तु मास पक्ष दिन नक्षत्र लग्न मुहूर्तेऽवेदं कृतं क्रियते च।

यह जो वर्तमान सृष्टि है, इसमें सातवें वैवस्वत मनु का वर्तमान है। इससे पूर्व छः मन्वन्तर हो चुके हैं और सात मन्वन्तर आगे होवेंगे। ये सब मिल कर चौदह मन्वन्तर होते हैं।

इस आधार पर वेदोत्पत्ति की काल गणना इस प्रकार होगी–

छः मन्वन्तरों का समय = ४३२००००×७१×६= १८४०३२०००० वर्ष

वर्तमान मन्वन्तर की २७ चतुर्युगी का काल= ४३२००००×२७= ११६६४०००० वर्ष

अट्ठाइसवीं चतुर्युगी के गत तीन युगों का काल= ३८८८००० वर्ष

कलियुग के प्रारम्भ से विक्रम सं. २०७२ तक का काल= ३०४३+२०७२ वर्ष

= ५११५ वर्ष

कुल योग = १८४०३२०००० +११६६४०००० + ३८८८००० +५११५ वर्ष

= १९६०८५३११५ वर्ष। चूंकि विक्रम संवत् के प्रारम्भ तक कलियुग के ३०४३ वर्ष व्यतीत हो चुके थे और ३०४४ वाँ वर्ष चल रहा था, इसलिए वर्तमान में १९६०८५३११६वाँ वर्ष चल रहा है।

अब कुछ विद्वान् कहते हैं कि सृष्टि की आयु जब मनु १००० चतुर्युगी मानते हैं और दूसरी तरफ इसी आयु को १४ मन्वन्तर अर्थात् ९९४ चतुर्युगी कहा जाता है, तो दोनों के अन्तर ६ चतुर्युगों का समन्वय कैसे होगा? इसका उत्तर यह है कि ९९४ चतुर्युग तो मानव भोग काल है और ६ चतुर्युगों का समय सृष्टि उत्पत्ति के प्रारम्भ से लेकर मानव अथवा वेदों की उत्पत्ति तक का है। सृष्टि उत्पत्ति में जो समय लगा है, वह सृष्टि की आयु में माना जावेगा। इसी प्रकार भोग काल ९९४ चतुर्युगों के अन्त में प्रलय काल प्रारम्भ होगा और वह प्रलय की आयु में जोड़ा जायेगा।

ऋग्वेद में स्पष्ट कहा गया है कि काल लगे बिना कोई कार्य नहीं होता–

त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्संपृञ्जानः सदने गोभिरद्भि।
कविबुध्नं परि मर्मृज्यते धीः सा देवताता समिति र्बभूवः।।

– ऋ. १.९५.८

अर्थ– मनुष्य को चाहिए कि (यत्) जो (संपृञ्जानः) अच्छा परिचय करता कराता हुआ (कविः) जिसका क्रम से दर्शन होता है, वह समय (सादने) सदन में (गोभिः) सूर्य की किरणों वा (अद्भिः) प्राण आदि पवनों से (उत्तरम्) उत्पन्न होने वाले (त्वेषम्) मनोहर (बुध्नम्) प्राण और बल सम्बन्धी विज्ञान और (रूपम्) स्वरूप को (कृणुते) करता है तथा जो (धीः) उत्पन्न बुद्धि वा क्रिया (परि) (मर्मृज्यते) सब प्रकार से शुद्ध होती है (सा) वह (देवताता) ईश्वर और विद्वानों के साथ (समितिः) विशेष ज्ञान की मर्यादा (बभूव) होती है, इस समस्त उक्त व्यवहार को जान कर बुद्धि को उत्पन्न करें।

भावार्थ– मनुष्यों को जानना चाहिये कि काल के बिना कार्य स्वरूप उत्पन्न होकर और नष्ट हो जाये– यह होता ही नहीं है और न ब्रह्मचर्य आदि उत्तम समय के सेवन के बिना शास्त्र बोध कराने वाली बुद्धि होती है, इस कारण काल के परम सूक्ष्म स्वरूप को जानकर थोड़ा–सा भी समय व्यर्थ न खोवें, किन्तु आलस्य छोड़कर समय के अनुसार व्यवहार और परमार्थ के कामों का सदा अनुष्ठान करें।

यह भी ध्यान रखें कि जिस क्रिया में जो समय लगे, वह उसी का होगा। स्वामी जी ने इस प्रकरण में वेद का उत्पत्ति काल बताया है, सृष्टि की आयु नहीं बताई है। यदि सृष्टि की आयु जानना चाहें तो इसमें सृष्टि का उत्पत्ति काल जोड़ दें, तब सृष्टि की आयु होगी–

= १९६०८५३११६+२५९२०००० = १९८६७७३११६ वर्ष

साथ ही सृष्टि की शेष आयु होगी= ४३२०००००००– १९८६७७३११६= २३३३२२६८८४ वर्ष सन्धि और सन्ध्यांश काल तो युगों की आयु में पहिले ही जोड़ लिए हैं, फिर मन्वन्तर के प्रारम्भ और अन्त में एक सतयुग का जोड़ना व्यर्थ है। स्वामी जी ने ही नहीं, मनु ने भी इसका उल्लेख नहीं किया है। ज्ञान के अभाव में सृष्टि उत्पत्ति काल को न समझकर २५९२०००० वर्षों को १५ भागों में व्यर्थ विभाजित कर क्षति पूर्ति करने का प्रयत्न किया गया है। इससे तो यहूदी ही अच्छे हैं, जो सृष्टि की उत्पत्ति ६ दिनों में स्वीकार करते हैं। यदि उनके दिन का मान एक चतुर्युगी मान लें तो उनकी सृष्टि उत्पत्ति की गणना ठीक वेदों के अनुरूप हो जाती है। इति।

– ७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा–३२४००९ (राजस्थान)

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीषकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

शैक्षणिक यात्रा – एक यात्री

– दिलीप अधिकारी

भ्रमण मनुष्य जीवन का एक अभिन्न अंग है। एक ही स्थान पर बहुत समय तक रहने से हम ऊब जाते हैं, नए-नए स्थानों पर जाने की इच्छा होती है। जब हम नए-नए स्थानों पर जाते हैं, तो वहाँ विविध वस्तुओं से परिचय होता है। हमारा ज्ञानवर्धन होता है। मन भी प्रसन्न होता है। हम जीवन में केवल पुस्तकों से ही नहीं, अपितु अन्य भी बहुत से माध्यम हैं, जिनसे सीखते हैं। उन्हीं माध्यमों में भ्रमण भी शिक्षा का एक अच्छा माध्यम है। जिन-जिन जगहों पर हम जाते हैं, वहाँ-वहाँ के लोगों की संस्कृति, परम्पराएँ, खानपान, वेशभूषा, रहन-सहन आदि का पता चलता है। अलग-अलग प्रकार के शिष्टाचारों का ज्ञान होता है। भ्रमण में विभिन्न स्वभाव वाले मनुष्यों से मिलन होता है, उनके व्यवहारों को देखकर हम बहुत कुछ सीखते हैं। भ्रमण से सृष्टि की विविधता का बोध होता है। विविध वनस्पतियाँ, नदी, पर्वत, झील, मन्दिर, महल इत्यादि वस्तुओं को देखकर मन नवीनता का अनुभव करता है। भ्रमण से वर्तमान की सामाजिक परिस्थितियों का ही नहीं, किन्तु विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों को देखकर हम पुरानी सभ्यता, कला, संस्कृति एवं परम्पराओं के बारे में भी ज्ञान प्राप्त करते हैं। भ्रमण में हमें विभिन्न परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं। उन सब में सामञ्जस्य करना होता है। संग में यात्रा हो तो उसका भी अलग ही अनुभव होता हैं।

हम लोगों का गुरुकुल ऋषि उद्यान की तरफ से २१ से २७ सितम्बर तक राजस्थान के कुछ जिलों का शैक्षणिक भ्रमण हुआ। भ्रमण में गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं आचार्यगण सम्मिलित थे। कुल यात्रियों की संख्या ३७ थी। उस यात्रा से सम्बन्धित कुछ जानकारियाँ और अनुभव आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

उद्योगशालाएँ- हमारे भ्रमण में उद्योगशालाओं को देखने का कार्यक्रम भी रखा हुआ था। सर्वप्रथम किशनगढ़ में आर.के. मार्बल्स उद्योगशाला में हम लोगों ने पत्थरों को काटने वाले बड़े-बड़े यन्त्रों को देखा। वहाँ सारा कार्य यन्त्रों से ही हो रहा था। पहले सोचता था कि इतने बड़े-बड़े पत्थरों को एक समान आकार में कैसे काटा जाता होगा, परन्तु वहाँ जाकर इसका उत्तर मिला। मुझे यन्त्रों को देखने व समझने में बहुत अच्छा लगता है। उनके बारे में जानने की इच्छा होती है। यह इच्छा वहाँ जाकर कुछ अंशों में पूर्ण हुई।

मेरे मन में उद्योगशालाओं के विषय में यह धारणा थी कि वहाँ बहुत गन्दगी रहती होगी। जब हमें आचार्य जी ने बताया था कि हम लोग उद्योगशालाओं को देखने जायेंगे तो नए-नए यन्त्रादि देखने को मिलेंगे, ऐसा सोचकर मन में उत्साह था, पर साथ ही साथ यह भी था कि वहाँ गन्दगी होगी, धूल होगी, परन्तु जब हम वहाँ गये तो वातावरण बिल्कुल विपरीत था। सारा परिसर अत्यन्त स्वच्छ था। सब वस्तुएँ व्यवस्थित थीं। वहीं के एक अधिकारी ने हम लोगों को वहाँ के बारे में सब कुछ विस्तार से बताया- कहाँ से पत्थर आते हैं, कैसे उन्हें काटा जाता है इत्यादि। इसी प्रकार किशनगढ़ में ही वस्त्र-उद्योगशालाएँ थीं। वहाँ कपड़े तैयार होते थे। बहुत बड़े-बड़े यन्त्र लगे हुए थे। कार्य बड़ी तीव्रता से हो रहा था। इसके कारण वहाँ धूल उड़ रही थी। हममें से बहुतों ने अपने नाक पर कपड़ा रखा और वह उचित भी था, पर मैंने सोचा कि यहाँ इतनी धूल है, फिर भी लोग कार्य करते हैं। मैं देखूँ बिना नाक पर कपड़ा रखे रह सकता हूँ कि नहीं। अन्दर गया। रह तो लिया, पर कुछ बाधा भी हुई। इतनी धूल में कार्य करते हुए कर्मचारियों को देखकर मन में दया का भाव भी आया। उनकी मेहनत को देख विषम स्थिति में भी अपने पुरुषार्थ को न छोड़ने की प्रेरणा मिली। उद्योगशालाओं को देखने हम लोग खेतड़ी में 'हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड' में भी भ्रमणार्थ गये। वहाँ पर बहुत बड़ी ताँबें की खान व उद्योगशाला थी। वहीं के एक अधिकारी ने हम लोगों को बताया कि पहले यहीं पर कच्चे माल से ताँबा, सोना और चाँदी अलग किया जाता था, परन्तु राजनैतिक कारणों से अब वह सब बन्द हो गया। अब तो कच्चा माल ही बेच दिया जाता है, कम्पनियाँ उसे खरीदती हैं। वहीं के कार्यकर्त्ता

एक युवक हमारा मार्गदर्शन कर रहे थे। उनकी बताने की शैली मुझे अच्छी लगी, क्योंकि वे कारण सहित प्रत्येक बात को समझा रहे थे। कारण सहित किसी बात को बताने से समझने में सुविधा होती है। इन तीनों प्रकार की उद्योगशालाओं को मैंने प्रथम बार देखा। वहाँ बहुत कुछ देखने व जानने को मिला। बहुत-सी उत्सुकताएँ शान्त हुईं।

ज्योतिष - ज्योतिष मैंने अभी नहीं पढ़ा है, परन्तु यह विषय मुझे बहुत प्रिय है। हाँ, पहले कुछ कुण्डली आदि बनाने की विधि सीखी थी। उस समय ग्रहों की स्थिति व गति के बारे में पढ़ा था, परन्तु वह केवल गणितीय विधि से ही था। सिद्धान्त पता नहीं था, अत: इसके विषय में जिज्ञासा थी। जयपुर में जन्तर-मन्तर में जाकर कुछ सीमा तक वह जिज्ञासा भी शान्त हुई। वहाँ हम लोगों ने विविध ज्योतिषीय यन्त्रों- जैसे धूपघड़ी, ध्रुवदर्शक, अयनबोधक, लग्नबोधक, राशिबोधक को देखा। मार्गदर्शक ने हमें उनके प्रयोग की विधियाँ भी समझाईं। बहुत कुछ समझ में आया, परन्तु आंग्लभाषा न जानने के कारण बहुत-सी बातें समझ में नहीं भी आयीं। फिर भी उन सबको देखकर, समझ कर ज्योतिष-विद्या के प्रति और भी रुचि पैदा हुई।

उसी प्रकार जयपुर में ही बिड़ला नक्षत्रशाला में मंगल-मिशन से सम्बन्धित बहुत-सी जानकारियाँ प्राप्त हुईं।

इन दोनों को देखकर सब को बहुत अच्छा लगा। सबने ज्योतिषीय यन्त्रों की कारीगरी की भी खूब प्रशंसा की।

किला- जयपुर में ही जयगढ़ एवं आमेर किले को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जयगढ़ किले में अष्टधातुओं से निर्मित विश्व की सबसे बड़ी तोप रखी हुई थी। उसे भी हम लोगों ने देखा। मार्गदर्शक ने हमें बताया कि वह तोप चार हाथियों से खींची जाती थी। जब वह बन कर तैयार हुई तो उसमें एक क्विण्टल बारूद डाला गया और गोला अन्दर भर के आग लगाई गई। उसके विस्फोट से इतनी तीव्र ध्वनि उत्पन्न हुई कि उसके पास में विद्यमान सभी लोग मर गये और वह गोला ३५ किलोमीटर दूर जाकर किसी गाँव में गिरा। जहाँ पर वह गोला गिरा, वहाँ एक बहुत बड़ा गड्ढा हुआ, जिसमें आज एक नहर बनी हुई है। दूसरी बार फिर उसका कभी प्रयोग नहीं हुआ। मुझे वहाँ एक बात विशेष लगी। किले की दीवारों के अग्रभाग में कुछ तिरछे छिद्र बने हुए थे, जहाँ से सैनिक लोग नीचे की स्थिति की निगरानी करते थे। उन छिद्रों से ऊपर वाला आदमी नीचे वाले को देख सकता है, परन्तु नीचे वाला ऊपर वाले को नहीं देख पाता है। प्राय: हर दीवार में इस प्रकार के छिद्र थे। जयगढ़ किला पहाड़ की चोटी पर है, अत: वहाँ पानी की व्यवस्था न होने से वृष्टि के पानी का भण्डारण किया जाता था। पूरे परिसर में बरसा हुआ पानी नालियों के माध्यम से टंकी में एकत्र होता और फिर वहीं से उपयोग में लिया जाता था। यह वृष्टि के जल का बहुत अच्छा उपयोग है। इस विधि से भी हम पेयजल के अभाव को दूर कर सकते हैं।

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान- हम लोग इसी यात्रा के दौरान राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर में भी गये। वहाँ पर हमारे आचार्य जी के एक परिचित व्यक्ति थे। उन्होंने पूरे परिसर को दिखाया। हर विभाग में ले जाकर वहाँ की विशेषताएँ, कार्य आदि के बारे में उन-उन विभागों के विशेषज्ञों के माध्यम से बहुत जानकारियाँ प्रदान कीं। वहाँ पर हम लोगों को विविध-प्रकार की औषधीय वनस्पतियाँ देखने को मिलीं। अष्टधातुओं के बारे में सुना था, पर वहाँ देखने का भी अवसर मिला। संस्थान वालों ने लगभग ७०० प्रकार की अलग-अलग आयुर्वैदिक जड़ी-बूटी, धातु एवं वनस्पतियों को नामांकन सहित प्रदर्शनी के रूप में रखा हुआ था। वहाँ पर भी बहुत-सी अदृष्टपूर्व वस्तुएँ देखने को मिलीं। शरीर-विभाग में शरीर के विभिन्न अंग, भ्रूण, मृतशरीर, अस्थि, कंकाल इत्यादि को देखकर उनकी रचना के विषय में और अधिक जानने की इच्छा हुई। उन्हें देखकर थोड़ा-सा श्मशान-वैराग्य भी हुआ। वहाँ सभी विभागों के विशेषज्ञों ने हमारा सहयोग किया। सबने अपने-अपने विभाग की विशेषताएँ बताईं। वहाँ हमें बहुत अधिक नई बातें जानने व समझने को मिलीं। सब कुछ ठीक होते हुए भी वहाँ एक बात मुझे ठीक नहीं लगी। वहाँ का चिकित्सालय अस्त-व्यस्त-सा प्रतीत हुआ। साफ-सफाई इतनी अच्छी नहीं थी। शौचालय आदि से दुर्गन्ध भी आ रही थी। चिकित्सालय में तो अच्छी साफ-सफाई होनी ही चाहिए।

आर्यसमाज- कुछ आर्य समाजों में भी जाने का

मौका मिला। वहाँ की गतिविधियाँ जानने को मिलीं। दैनिक या साप्ताहिक अग्निहोत्र, भजन, सत्संग इत्यादि तो सबमें समान था, किन्तु आर्य समाज सरदार शहर में एक विशेष बात मुझे काफी अच्छी लगी। वहाँ प्रतिदिनि आधा या पौन घण्टा सब लोग मिलकर स्वाध्याय करते हैं। स्वाध्याय की प्रवृत्ति का होना एक अच्छी बात है। इसके अभाव में बहुत-सी मिथ्या मान्यताएँ प्रसारित हो जाती हैं। किसी बात को दूसरे से सुनकर जानने के बजाय स्वयं पढ़कर जाना जाए तो उसमें अधिक विश्वास हो सकता है, अन्यथा सुनी-सुनाई बातों में बहुत-सी मिथ्या अवधारणाएँ सम्मिलित हो जाती हैं। स्वाध्याय की वृत्ति प्रायः सभी आर्यजनों में होती है, स्वयं यदि स्वाध्याय नहीं भी करते हों तो भी दूसरे को प्रेरणा अवश्य देते हैं। यह भी अच्छी बात है, पर यदि सब आर्य लोग स्वयं स्वाध्यायशील हों, उद्यमी हों, विचारशील हों तो कितनी अच्छी बात होगी!

आर्य प्रतिनिधि सभा, जयपुर में हम लोगों ने दो दिन-रात को भोजन एवं विश्राम किया। वहाँ के युवा कार्यकर्त्ताओं की सेवा भावना प्रशंसनीय है, उन्होंने उत्साहपूर्वक अपने ही हाथों से भोजन बनाकर हम लोगों को खिलाया। जिस दिन हम वहाँ पहुँचे, उस दिन रात को भोजन के बाद वहीं के एक कार्यकर्त्ता ने वहाँ की गतिविधियों को बताते हुए आर्य समाज में नेतृत्व के अभाव से अधिकारियों की स्वच्छन्द प्रवृत्ति पर दुःख व्यक्त किया। अगले दिन रात को एक छोटा-सा कार्यक्रम रखा हुआ था, जिसमें तीस-चालीस लोग आए हुए थे। आचार्य जी ने वहाँ लोगों की शंकाओं का समाधान किया।

आर्य समाज, मण्डावा में भी हम लोग गये। वहाँ का अतीत प्रेरणास्पद था, परन्तु वर्तमान की स्थिति आशाजनक नहीं थी। पूरा भवन सूना पड़ा हुआ था। केवल अतीत की गाथाओं से किसी समाज की गतिशीलता एवं उन्नति की कल्पना नहीं की जा सकती। वर्तमान का उद्यम ही हमें प्रगत एवं उन्नत करेगा- इसमें कोई शंका नहीं है।

श्रीगंगानगर - गंगानगर में मूक बधिर विद्यालय को देखते हुए हम लोग हिन्दूमल कोट (भारत-पाक सीमा) पर गये। वहाँ सीमा सुरक्षा बल के जवानों का शिविर (कैम्प) था। हमारे वहाँ पहुँचने पर वहीं के एक अधिकारी ने सब का स्वागत किया। तत्पश्चात् उन्होंने हमें वहाँ की परिस्थितियों से अवगत कराया। सीमा के शून्य-बिन्दु से १५० फीट अन्दर भारत की तरफ कांटेदार तारों की बाड़ बनी हुई थी। उसके अन्दर की तरफ सैनिक चौकियाँ थीं। लगभग १००-१०० मीटर की दूरी पर तीव्र प्रकाश करने वाली लाइटें लगी हुई थीं। पाकिस्तान की तरफ वाली जमीन खाली पड़ी हुई थी। वहाँ के अधिकारी ने बताया कि रात को कोई भी व्यक्ति सीमा के अंत्यबिन्दु से अन्दर दीखता है तो उस पर तुरन्त बिना विचारे गोली चलाने की छूट सैनिकों को होती है। उन्होंने यह भी बताया कि सीमा पर पहरा देने वाले प्रत्येक जवान को बहुत अधिक जागरूक रहना पड़ता है। उसे पहरा देने के समय क्षणभर बैठने की भी अनुमति नहीं होती है। सैनिक के अन्दर यह भावना जगाई जाती है कि वह इस देश का सबसे जिम्मेदार आदमी है। वह सोचता है, यदि मुझसे कोई चूक हुई तो पूरा देश खतरे में पड़ जायगा, ऐसा सोचकर वह बड़ी जागरूकता से अपने कर्त्तव्य को निभाता है। मैं बचपन में पुलिस और सेनाओं के जवानों से बहुत डरता था। मुझे लगता था- ये कहीं गोली न चला दें। गाँव में कभी पुलिस आती तो घर के अन्दर घुस जाता था, परन्तु जब से सैनिकों की वीर गाथाओं को सुना, उनकी आवश्यकता को महसूस किया तो अब उनसे डर नहीं लगता। भला अपने रक्षक से भी कोई डरता है? फिर हम लोग हिन्दूमल कोट से वैदिक कन्या गुरुकुल फतही पहुँचे। इस गुरुकुल के संस्थापक व संचालक स्वामी सुखानन्द महाराज जी हैं। गुरुकुल में ज्यादातर पूर्वोत्तर राज्यों की बहनें अध्ययन करती हैं। रात्रि को भोजन एवं विश्राम की व्यवस्था हमारी वहीं पर हुई। स्वामी जी ने विशेष रूप से हम लोगों के लिए गूलर एवं घृतकुमारी की अलग-अलग सब्जियाँ बनवाई थीं। भोजन हुआ। भोजन के बाद एक छोटी-सी सभा रखी गई, उसमें स्वामी जी ने गुरुकुल का परिचय प्रदान किया। तत्पश्चात् आचार्य जी ने शंका-समाधान किया। फिर रात को विश्राम कर, प्रातः जल्दी उठ, सन्ध्याग्निहोत्र करके सुजानगढ़ की ओर प्रस्थान किया।

सुजानगढ़ की ओर आते हुए रास्ते में तालछापर पड़ता है। वहाँ एक विशाल अभयारण्य है, जहाँ हिरण रहते हैं।

उसे हम लोगों ने देखा। वहाँ हिरणों के झुण्ड-के-झुण्ड विहार करते हुए दृष्टिगोचर हुए। हमारी बस रुकी, सबने बस से उतर कर उन्हें अच्छी प्रकार निहारा। फिर वहाँ से सुजानगढ़ की ओर चल दिए। सुजानगढ़ में ब्रह्मप्रकाश लाहोटी जी के परिवार में जाना हुआ। वह परिवार वैदिक विचारधारा से जुड़ा हुआ था। वहाँ एक वृद्धा माता का वात्सल्यपूर्ण व्यवहार देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। हम लोग उनके घर लगभग दिन में तीन बजे के आसपास पहुँचे थे। हमारा मध्याह्न भोजन नहीं हुआ था। परिवार के कोई सज्जन आचार्य जी से कुछ चर्चा कर रहे थे, तभी वह माता उन सज्जन से कहती हैं- 'ये अभी भूखे हैं, इन्होंने भोजन नहीं किया है, इन्हें पहले भोजन करने दो, फिर बाद में चर्चा कर लेना।' तत्पश्चात् वहीं पास में किसी सज्जन के घर में हमारी भोजन की व्यवस्था थी। बड़ी श्रद्धा से उन्होंने हमें भोजन आदि कराया।

उपसंहार - इस यात्रा में हम और भी बहुत से स्थानों पर गये, जिनमें खाटू श्याम मन्दिर, जीणमाता मन्दिर, सालासर बालाजी मन्दिर, राणीसती मन्दिर, लोहार्गल सूर्य मन्दिर, शेखावटी में पोद्दार हवेली, पिलानी में बिड़ला म्यूजियम इत्यादि प्रमुख हैं। लोहार्गल में पर्वतारोहण का भी आनन्द लिया और फिर लौटते हुए लाडनूँ में 'जैन विश्व भारती' भी गये। वहाँ पर प्रेक्षाध्यान के बारे में कुछ बातें जानने को मिली। श्वेताम्बरों को निकटता से देखने का अवसर मिला। वहाँ हमें प्राचीन एवं विशाल पुस्तकालय भी देखने को मिला, जिसमें बहुत-सी पुरानी पुस्तकें रखी हुई थीं। फिर वहाँ से हमारी वापसी हुई।

इस पूरी यात्रा में आचार्य श्री सत्यजित् जी, उपाचार्य श्री सत्येन्द्र जी, उपाध्याय श्री सोमदेव जी एवं अध्यापक श्री ज्ञानचन्द्र जी हम लोगों के साथ में रहे। आचार्य जी की पूरी व्यवस्था में हमें कोई कष्ट नहीं हुआ। सम्पूर्ण यात्रा सुव्यस्थित रही। आचार्य जी का प्रबन्धन कौशल बड़ा अद्भुत है। उससे हमें बहुत अधिक शिक्षा प्राप्त हुई। यात्रा के बाद सब खुश व प्रसन्न हैं। अन्त में मैं परोपकारिणी सभा, गुरुकुल, आचार्य जी एवं अन्य महानुभावों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ, जिनकी कृपा से हम लोग यात्रा करने में समर्थ हुए। यात्रा के दौरान भी अलग-अलग स्थानों पर बहुत-से सज्जनों से अलग-अलग प्रकार का सहयोग प्राप्त हुआ। उनके प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ जनवरी २०१६ तक)

१. श्री प्रवीण / श्री दीपक ओबराय, नई दिल्ली २. श्री प्रवीण माथुर, अजमेर ३. श्री हेमन्त कुमार आर्य, अजमेर ४. मा. श्री ईश्वर सिंह वर्मा, बागपत, उ.प्र. ५. श्री आयुष आर्य, नई दिल्ली ६. श्री रुद्र कुमार वर्मा, अलवर, राज. ७. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली ८. श्री ओमप्रकाश लढ्ढा, अजमेर ९. आर्य समाज, नई दिल्ली १०. श्री जयपाल सिंह, गाजियाबाद, उ.प्र. ११. श्री विनोद कुमार, सरसा, हरियाणा १२. श्रीमती अदिति गुप्ता, दिल्ली १३. श्रीमती कमला देवी/ श्री बद्री प्रसाद पंचोली, अजमेर १४. जेनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली १५. श्रीमती उषा/ श्री रमेश मुनि, अजमेर

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ जनवरी २०१६ तक)

१. श्रीमती सत्यावानी आर्या, विजयनगरम्, आन्ध्र प्रदेश २. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ३. श्री कपिल आर्य, गुडगांव, हरियाणा ४. श्री मुरलीधर भट्ट, अजमेर ५. श्री रामेश्वरलाल शर्मा, अजमेर ६. श्री नरेन्द्र प्रकाश, अजमेर ७. श्रीमती सुन्दर देवी, अजमेर ८. श्री गोवर्धन प्रसाद खण्डेलवाल, अजमेर ९. श्री कैलाशचन्द्र गुप्ता, अजमेर १०. श्री सुरेश खण्डेलवाल, अजमेर ११. श्री महेश खण्डेलवाल, अजमेर १२. श्री देवेन्द्र यादव, अजमेर १३. श्री कैलाश शर्मा, अजमेर १४. श्री दिनेशचन्द नवाल, अजमेर १५. श्रीमती लता मंगल, अजमेर १६. श्रीमती बीना परिहार, अजमेर १७. श्री राजनारायण रावत, अजमेर १८. श्री देवांश चौहान, अजमेर १९. श्री वेदप्रकाश, अजमेर २०. श्रीमती सुशीला शर्मा, अजमेर २१. श्री ओमप्रकाश आर्य, अजमेर २२. श्री पवन अग्रवाल, अजमेर २३. श्री रमेश शर्मा, अजमेर २४. श्री कटारिया परिवार, अजमेर २५. श्री उमेशचन्द त्यागी, अजमेर २६. श्री पी.के.शर्मा, अजमेर २७. श्रीमती अलका, अजमेर २८. श्रीमती शकुन्तला, अजमेर २९. श्री वेदवीर सिंह, जयपुर, राज. ३०. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर ३१. श्रीमती मंजू सांखला, अजमेर ३२. श्री गुरुदत्त, नई दिल्ली ३३. श्रीमती राजकुमारी अग्रवाल, फैजाबाद, उ.प्र. ३४. श्री रूद्र कुमार वर्मा, अलवर, राज. ३५. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बालाकेन्ट, पंजाब ३६. श्री कल्याण राय शर्मा, अजमेर ३७. श्रीमती सुशीला माताजी, अजमेर ३८. श्रीमती निर्मला देवी, अजमेर ३९. श्री वेदान्त अजमेर ४०. श्री मयंक कुमार, अजमेर ४१. श्रीमती कमला देवी/ श्री बद्री प्रसाद पंचोली, अजमेर ४२. श्री पी.एस. अग्रवाल, जयपुर, राज. ४३. श्री देवेन्द्र सिसोदिया, अजमेर ४४. श्रीमती प्रेरणा शर्मा, अजमेर ।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है। **–महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४**

ऋषि मेला २०१५ दानदाता सूची

१०१. आर. आर. ज्वैलर्स, अजमेर १०२. मदनलाल सुन्दरदेवी चेरिटेबिल ट्रस्ट, अजमेर १०३. कम्पीटिशन प्लस संस्थान, अजमेर १०४. डॉ. गौतमदेव शारदा, अजमेर १०५. श्री पुरुषोत्तम बूब, अजमेर १०६. डॉ. बद्रीप्रसाद, पंचोली, अजमेर १०७. श्री एस.एस.सिद्धु, अजमेर १०८. श्री योगदत्त शर्मा, अजमेर १०९. श्री योगमुनि, धुले, महाराष्ट्र ११०. डॉ. रामनारायण लाल आर्य, गोरखपुर, उ.प्र. १११. श्री नरसिंह गोडा, गंजम, ओडिशा ११२. श्री रामजीलाल आर्य, अलवर, राज. ११३. श्री पुरषोत्तम/मन्जु शर्मा, अजमेर ११४. प्रिंसीपल, डी.ए.वी. कॉलेज, चंडीगढ ११५. श्री एस. तिरुपतिराव, हैदराबाद ११६. श्री सुधीर कुमार सोहानी, नासिक, महाराष्ट्र ११७. श्री गोपीलाल , भंवरलाल एण्ड सन्स, ऊँझा, गुजरात ११८. श्री विवेकानन्द वरिष्ठ नागरिक संस्थान, अजमेर ११९. डॉ. आर.के. मेहता, अजमेर १२०. श्री माणकचन्द राँका, अजमेर १२१. श्री कमल शर्मा, अजमेर १२२. श्रीमती माया भार्गव, अजमेर १२३. श्री रमेश चन्द गुप्त, अजमेर १२४. श्री रामदेव आर्य, अजमेर १२५. श्री चाँदरतन धम्मभानी, कोलकाता १२६. श्री हरनारायण चंडक, प. मुम्बई, महाराष्ट्र १२७. श्री टी.आर.शर्मा, सुरैन १२८. श्री प्रेमकुमार श्रीवास्तव, सुमेरपुर १२९. श्री दयाकिशन आर्य, रोहतक, हरियाणा १३०. श्रीमती अरुणा गुप्ता, देहरादून, उत्तराखण्ड़ १३१. श्रीमती सीतादेवी वर्मा, अजमेर १३२. श्रीमती कलावती, अजमेर १३३. श्रीमती सुषमा जैमिनि, अजमेर १३४. श्री वीरेन्द्र बहल, अजमेर १३५. श्री दशरथसिंह चौहान, अजमेर १३६. पं. श्रद्धानन्द शास्त्री, अजमेर १३७. डॉ. अचला आर्य, अजमेर १३८. श्री वेदान्त, अजमेर १३९. जैन बिल्डर्स, अजमेर १४०. श्री पूर्णशंकर दशोरा, अजमेर १४१. श्री राकेश जैन, अजमेर १४२. श्रीमती सुलेखा शर्मा, अजमेर १४३. श्री लूणकरण पाण्डिया,अजमेर १४४. श्री ओमप्रकाश लड्ढा, अजमेर १४५.श्रीमती कृष्णा, देहरादून १४६. श्रीमती सुशीला शर्मा, अजमेर १४७. श्री यशपाल वालिया, होशियारपुर १४८. श्री रमेशचन्द आर्य, शाहजहाँपुर १४९. श्रीमती उषा आर्य व श्री रमेश मुनि, अजमेर १५०. श्रीमती दीपा कोरानी, अजमेर १५१. डॉ. कृष्णपाल सिंह, जयपुर, राज. १५२.श्री देवमुनि, अजमेर १५३. श्री पान्डुरंग चन्दे, बालाघाट, १५४. श्री ताराचन्द यशराज, तामकोरे १५५. श्री करतार सिंह बत्रा, जोधपुर,राज. १५६. श्री बाबूलाल सोमवंशी, लातुर १५७. श्री नफेसिंह सैनी,रोहतक, हरियाणा १५८. श्री अमृत वैश्य, लखनऊ, उ.प्र. १५९. श्री जवाहर चीनमल रोहिड़ा, कोल्हापुर, महाराष्ट्र १६०. श्री किशनगोपाल महरोत्रा, चम्पावत, उत्तराखण्ड़ १६१. श्री विष्णुआर्य, नई दिल्ली १६२. श्री राजेन्द्र कुमार, हरियाणा १६३. श्री हर्षवर्धन, अजमेर १६४. श्री अनिल, अजमेर १६५. श्री विजय शंकर, पटना, बिहार १६६. आर्यसमाज, धुले, महाराष्ट्र १६७. श्रीमती धनवतीदयालदास रेलन, धुले, महाराष्ट्र १६८. श्री बालेकरशंकर राव, निजामाबाद १६९. श्री राम नारायण गुप्ता, सोनभद्रा, उ.प्र. १७०. कै. बच्चनसिंह आर्य, सीकर, राज. १७१. श्री राम आर्य, विदिशा, म.प्र. १७२. श्री राम सिंह आर्य, रेवाड़ी, हरियाणा १७३. श्री ओ.पी.शर्मा, आगरा, उ.प्र. १७४. श्री ब्रह्मप्रकाश आर्य, गाजियाबाद, उ.प्र. १७५. श्री दिनेश कुमार शर्मा, नोएडा, उ.प्र. १७६. श्री प्रभुलाल पंडा, गंजम, ओडिशा १७७. श्री मोगुल्लपा आर्य, बीदर १७८. श्री ओमप्रकाश पारीक, अहमदाबाद १७९. श्री विनोदकुमार सिंह, अजमेर १८०. श्री राधेश्याम, अजमेर १८१. श्रीमती कमला देवी, अजमेर १८२. कृष्णा मेडीकल स्टोर, अजमेर १८३. श्री ओमप्रकाश बहेती, अजमेर १८४. श्रीमती आराधना, अजमेर १८५. सुधा वर्मा, अजमेर १८६. श्री के. गिरधर, अजमेर १८७. श्री नवीन मिश्र, अजमेर १८८. डॉ. सुभाष महेश्वरी, अजमेर १८९. श्री कुँजबिहारी लाल पालड़िया, अजमेर १९०. श्री मोहनचन्द आर्य, अजमेर १९१. श्री मनोज शारदा, अजमेर १९२. श्रीमती रजनी शारदा, अजमेर १९३. श्री सौरभ शारदा, अजमेर १९४. श्रीमती अरुणा पारीक, अजमेर १९५. श्री सुरेन्द्र कुमार रामचन्दानी, अजमेर १९६. श्री वासुदेव आर्य, अजमेर १९७. श्रीमती शान्ति देवी सोमानी, अजमेर १९८. श्री नत्थुलाल काकानी, अजमेर १९९. स्व. श्री रमेशचन्द शास्त्री २००. श्री देवपाल आर्य, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.।

जिज्ञासा समाधान – १०५

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा– (१) मेरी शंका है कि जब जीवात्मा श्रेष्ठ ज्ञान, कर्म, उपासना अथवा योग बल से मोक्ष प्राप्त कर के ईश्वर के साथ आनन्द भोगता है। फिर अवधि पूर्ण होने पर वापिस संसार में आकर एक सामान्य परिवार में जन्म लेता है, जबकि उसने तो श्रेष्ठ ज्ञान, कर्म, उपासना की है। उसे तो श्रेष्ठ तथा धार्मिक उच्च कुलमें जन्म मिलना चाहिए। कृपया मेरी शंका दूर कीजिए।

(२) उपदेश प्रारम्भ होने से पूर्व आप एक वेदमन्त्र (ओं यतो यत: समीहसे ततो नोऽभयम् कुरू.....) का उच्चारण करते हैं। मैं भी दैनिक यज्ञ में प्रतिदिन आहुति इस मन्त्र से डालती हूँ, परन्तु इसका मुझे भावार्थ पूर्णरूप से समझ नहीं आ रहा है। कृपया, इसका भावार्थ समझाएँ।

(३) मेरी तीसरी शंका है कि वेद, ऋषि–मुनि, विद्वान् तथा वैज्ञानिक आदि सभी यही मानते हैं कि पेड़–पौधों में आत्मा होती है, परन्तु कुछ पौधे जैसे– साग–सब्जी, मेथी–बथुवा, पालक आदि हम सब दैनिक प्रयोग करते हैं तो हम क्या इन आत्माओं का हनन करके पाप करते हैं? क्या हम पाप के भागी नहीं हुए? कृपया बताएँ।

– सुमित्रा आर्या, २६१/८, आदर्श नगर, सोनीपत, हरियाणा

समाधान– (क) मुक्ति निष्काम कर्म करते हुए विशुद्ध ज्ञान से होती है। जब जीवात्मा संसार से विरक्त होकर निष्काम कर्म करते ज्ञान, अर्थात् ईश्वर, जीव, प्रकृति के यथार्थ स्वरूप को पृथक्–पृथक् समझ लेता है और अपने विवेक से अन्दर के क्लेशों को दग्ध कर शुद्ध हो जाता है, तब मुक्ति होती है। इस मुक्ति की एक निश्चित अवधि ऋषि ने कही है, जो ३६ हजार बार सृष्टि प्रलय होवे, तब तक मोक्ष अवस्था का समय है। इस मुक्त अवस्था में जीवात्मा सर्वथा अविद्या से निर्लिप्त रहता है, अर्थात् विवेकी–ज्ञानी बना रहता है। जब मुक्ति की अवधि पूरी हो जाती है, तब जीव को परमेश्वर संसार में जन्म देता है। जन्म, अर्थात् शरीर धारण कराता है। इस शरीर के मिलने पर आत्मा मुक्ति की अवस्था जैसा ज्ञानी नहीं रहता। उसे जन्म भी सामान्य मनुष्य का मिलता है, अर्थात् सामान्य परिवार, सामान्य शरीर, सामान्य बुद्धि, सामान्य इन्द्रियाँ आदि। इसमें आपका कहना है कि आत्मा ने तो श्रेष्ठ ज्ञान, कर्म, उपासना की थी, उस ज्ञान, कर्म, उपासना के बल से अब सामान्य मनुष्य न बनाकर परमेश्वर श्रेष्ठ मनुष्य क्यों नहीं बनाता? इसमें सिद्धान्त यह है कि जीवात्मा ने जिन श्रेष्ठ ज्ञान, कर्म, उपासना आदि को किया था, उनका श्रेष्ठ फल मुक्ति के रूप में भोग चुका है। मुक्ति की अवधि पूरी होने के बाद उसके पास अब श्रेष्ठ ज्ञान, कर्म, उपासना नहीं रहे, अब वह अपनी सामान्य स्थिति में आ गया है, इसलिए उसको सामान्य मनुष्य का जन्म मिलता है।

इसको लौकिक उदाहरण से भी समझ सकते हैं, जैसे संसार में हमें कोई वस्तु शुल्क देकर प्राप्त है, शुल्क न होने पर वस्तु भी प्राप्त नहीं होती। किसी के पास एक हजार रुपये हैं, उन्हें खर्च करने पर उसको एक हजार की वस्तु मिल जाती है, अर्थात् उसने एक हजार का फल प्राप्त कर लिया। यह खर्च होने पर उसको फिर से एक हजार का फल नहीं मिलेगा। उसके लिए फिर एक–एक हजार रु. कमाने पड़ेंगे। ऐसे मुक्ति श्रेष्ठ ज्ञान, कर्म, उपासना का फल है, उस फल को भोगने के बाद वह फिर से श्रेष्ठ को प्राप्त नहीं कर सकता। उसको प्राप्त करने के लिए पुन: श्रेष्ठ ज्ञान, कर्म, उपासना को करना होगा।

इसलिए आपने जो पूछा कि उसको श्रेष्ठ जन्म क्यों नहीं मिलता, उसका कारण हमने यहाँ रख दिया है, इतने में ही समझ लें।

(ख) यतो यत: समीहसे ततो नो अभयं कुरू।
शं न: कुरू प्रजाभ्योऽभयं न: पशुभ्य:।।

–यजु. ३६.२२

इस मन्त्र का पदार्थ सहित भावार्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि लिखते हैं पदार्थ आर्याभिविनय पुस्तक से लिया है। (यत:+यत:) जिस–जिस देश से (समीहसे)

सम्यक् चेष्टा करते हो (ततः) उस-उस देश से (नः) हमको (अभयम्) भय रहित (कुरू) करो (शम्) सुख (नः) हमको (कुरू) करो (प्रजाभ्यः) प्रजा से (अभयम्) भयरहित (नः) हमको (पशुभ्यः) पशुओं से।

भावार्थ विस्तार से यह है- हे परमेश्वर! आप जिस-जिस देश से जगत् के रचना और पालन के अर्थ चेष्टा करते हैं, उस-उस देश से हमको भय से रहित करिए, अर्थात् किसी देश (स्थान) से हमको किञ्चित् भी भय न हो, वैसे ही सब दिशाओं में जो आपकी प्रजा और पशु हैं, उनसे भी हमको भय रहित करें तथा हमसे उनको सुख हो, और उनको भी हमसे भय न हो तथा आपकी प्रजा में जो मनुष्य और पशु आदि हैं, उन सबसे जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पदार्थ हैं, उनको आपके अनुग्रह से हम लोग शीघ्र प्राप्त हों, जिससे मनुष्य जन्म के धर्मादि जो फल हैं, वे सुख से सिद्ध हों।। - ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ई.प्रा.वि.

(ग) पेड़-पौधों में आत्मा है, इसको प्रमाणपूर्वक अनेक विद्वान् स्वीकार करते हैं। अनेक विद्वानों ने स्वीकार किया है, आज विज्ञान भी इसको स्वीकार करता है, किन्तु कुछ विद्वान् वृक्षादि में आत्मा नहीं मानते। जो नहीं मानते, उनके लिए तो यह प्रश्न बनेगा ही नहीं। हाँ, जो आत्मा को वृक्षों में स्वीकारते हैं, उनके लिए यह प्रश्न बनता है। इस विषय में पहले भी अनेक वाद-विवाद हो चुके हैं, शास्त्रार्थ हो चुके हैं।

हमारी समझ से जिन पौधों का नाम आपने लिया है, उनका प्रयोग करने में हमें पाप नहीं लगेगा, ये पौधे परमेश्वर द्वारा हमारी जीवन रक्षा के लिए बनाए हैं। इनका प्रयोग करने का आदेश परमेश्वर द्वारा वेद के माध्यम से किया गया है। खेती करने का विधान परमात्मा की ओर से ही है। शाक-सब्जी में जो पौधे प्रयोग में आते हैं, उनको लेने में पाप नहीं होता और उन आत्माओं का हनन भी नहीं होता, क्योंकि पेड़-पौधों में जो आत्माएँ होती हैं, वे मूर्छा अवस्था में होती हैं, उनकी इन्द्रियों का व्यवहार बाह्य जगत् से नहीं होता, इसलिए उनको अन्य प्राणियों की भाँति सुख-दुःख भी नहीं होता। हाँ, इसमें इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि जो वृक्षादि जगत् के लिए अधिक उपयोगी हैं, अनेक प्राणियों के लिए आश्रय रूप हैं, उन वृक्षों को काटने से अवश्य पाप लगेगा। मनुष्य की शरीर रक्षा के लिए परमात्मा ने जिन पौधों का निर्माण किया है, उनका प्रयोग करने में पाप नहीं लगेगा। अस्तु।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती - संक्षिप्त परिचय

स्वामी जी का जन्म उत्तर प्रदेश में सम्वत् १९७७ में हरियाली तृतीया को हुआ। बाल्यकाल से ही स्वामी जी का जीवन सदाचार एवं धार्मिक विचारों से ओत प्रोत था। वैराग्य की भावना प्रारम्भ से ही थी। उसी के आधार पर स्वामी जी ने किशोर अवस्था में ही सन्त स्वामी जी श्री मंगलानन्द सरस्वती से तपोवन देहरादून में संन्यास दीक्षा ग्रहण की। जीवन में परिवर्तन लाने वाली एक अद्भुत घटना हुई कि एक धार्मिक व्यक्ति ने स्वामी जी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया और स्वामी जी से प्रार्थना की कि आप इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। भक्त की प्रार्थना स्वीकार कर, स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा और पढ़ने के पश्चात् वैदिक धर्म के प्रचार का व्रत लिया। उसी श्रृंखला में अनेक धार्मिक स्थलों का भ्रमण किया और कठिन तपस्या करते रहे। सन् १९६७ से गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (बल्लभगढ़) फरीदाबाद में गुरुकुल की सेवा का कार्य किया। कुछ समय के बाद श्री दयानन्द आश्रम खेड़ाखुर्द दिल्ली में व्यवस्थापक के रूप में कई वर्षों तक सेवा करते रहे। उसी अवधि में गोरक्षा आन्दोलन में बड़े उत्साह से भाग लिया और अपने भक्तों के साथ जेल यात्रा की। बाद में पुनः गुरुकुल की चहुंमुखी प्रगति के लिए प्रयत्न में लग गए। कुछ वर्षों तक स्वामी जी ने पूज्यपाद श्री स्व. योगेश्वरानन्द (ऋषिकेश) के चरणों में बैठकर योग साधना की। वर्तमान में स्वामी जी गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी के मुख्याधिष्ठाता पद पर प्रतिष्ठित हैं। भक्तों द्वारा प्रार्थना करने पर समाज में सामाजिक तथा नैतिक विचारों की स्थापना के लिये गुरुकुलों व महाविद्यालयों में संस्कृत पढ़ने वाले गरीब बच्चों की सहायता के लिए स्वामी जी ने स्वयं अपनी पवित्र एकत्रित धनराशि से ट्रस्ट की स्थापना की।

सम्प्रति कुछ वर्षों से स्वामी जी का स्नेह एवं सहयोग परोपकारिणी सभा को प्राप्त हो रहा है। सभा उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घ आयुष्य की कामना करती है।

एक असंगत लेख की शव-परीक्षा

-सत्येन्द्र सिंह आर्य

आर्य जगत् की प्रतिष्ठित पत्रिका 'परोपकारी' पाक्षिक के वर्ष २०१५ के दिसम्बर (प्रथम) अंक में **''ईश्वर की सिद्धि में प्रमाण है''** शीर्षक के अन्तर्गत किन्हीं श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा का एक लेख प्रकाशित हुआ है। लेख का शीर्षक तो ऐसा आकर्षक है, जैसे लेखक कोई वेदज्ञ विद्वान् हो और साधना-पथ का पथिक हो, परन्तु जब लेख पढ़ा तो पाया कि यहाँ-वहाँ थोथे शब्द जाल के अतिरिक्त असंगत बातें ही अधिक हैं। खोदा पहाड़ निकला चूहा!

प्रथम पैराग्राफ में लिखा है- ''पूर्व में जो तपस्वी/संन्यासी /महात्मा हुए उन्होंने ईश साक्षात्कार किया है- जैसे गोस्वामी तुलसीदास ने **'तिलक देत रघुवीर'** लिखा है। एक सन्त को गधे में भगवान् के दर्शन हुए। ये घटित घटनाएँ हैं।'' रामचरित मानस में लिखी बात **'तिलक देत रघुवीर'** का ईश्वर साक्षात्कार से क्या लेना-देना? यदि तिलक लगाने से ईश साक्षात्कार होता तो भज-भज मण्डली वाले करोड़ों तिलकधारियों को अब तक ईश्वर साक्षात्कार हो गया होता। ''सन्त को गधे में भगवान के दर्शन हुए''- यह तो बुद्धि के दिवालियेपन की बात है। ईश्वर तो आत्मा की भी आत्मा है, अतः ईश्वर की अनुभूति तो अन्दर ही हो सकती है। गधे में भगवान के दर्शन करने का दावा करने वाला कोई भांग-चरस आदि का नशैड़ी (मद्यप) होगा।

लेखक आगे लिखता है कि ''रामेश्वरम् में गंगा जल चढ़ाने वाला हृदय में गंगा जल की धार'' जैसा अनुभव करता है। यह कपोल कल्पना है। गंगा की धार हृदय में कहाँ से पहुँच गयी। **''वेद के सूक्तों के जितने मन्त्रदृष्टा ऋषि हुए हैं।''** इस विषय में तथ्य यह है कि वेद मन्त्रों के साथ जिन ऋषियों का नाम लिखा मिलता है, वे वेद - मन्त्रार्थ दृष्टा ऋषि हैं, वेद मन्त्र दृष्टा नहीं। वेद-मन्त्रदृष्टा तो चार ऋषि सृष्टि के आदि में हुए हैं- अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा, जिन्हें ईश्वर से वेद का ज्ञान प्राप्त हुआ।

लेखक ने आगे योग के सिलसिले में अँधेरे में तीर चलाये हैं। लिखा है- ''साधना आगे बढ़ने पर रीढ़ में कष्ट होना, कुण्डलिनी जागरण-ये सब स्थितियाँ होती हैं।'' अच्छा होता यदि लेखक इस विषय में योग, वेदान्त, सांख्य दर्शन का कोई सूत्र उद्धृत करते। अनर्गल बात लिखने का क्या लाभ?

लेखक इतना लिखकर ही नहीं रुका। आगे लिखा है - ''इसी समय आत्मसाक्षात्कार होता है, हृदय से स्पष्ट आवाज आती है-मैं यहाँ हूँ। फिर कुण्डलिनी जागरण ऊपर की ओर होता है, तब मस्तिष्क में घण्टियों जैसी आवाज होती है। इसे वेदों में अनाहत नाद कहा गया है। जब कुण्डलिनी जागरण सहस्राधार चक्र तक होता है तथा मस्तिष्क में पानी झरने जैसा अनुभव होता है। मस्तिष्क में ढक्कन खुलने, बन्द होने जैसा अनुभव होता है। इस दौरान एकाएक नींद खुलना, रीढ़ की हड्डी में भयंकर कष्ट होना, ये सब बातें होती हैं। तब ध्यान करने पर शिवजी, ब्रह्मा जी अथवा विष्णु भगवान स्पष्ट दिखाई देते हैं। आँखें बन्द होते ही उनसे मानसिक बातचीत भी होती है। यही ईश-साक्षात्कार है।'' ये सब बे सिर-पैर की बेतुकी बातें हैं। न यम, नियमों का पालन, न तप, न ज्ञान-प्राप्ति और हो गया सीधे ईश -साक्षात्कार। यह तो ऐसा ही है जैसा कादियां के मियाँ (मिर्जा गुलाम अहमद) की खुदा से भेंट होती रहती थी। ऐसी बे सिर-पैर की बेतुकी बातों का ईश्वर-साक्षात्कार से कुछ भी लेना-देना नहीं है।

जो ईश्वर के स्वरूप को, गुण,कर्म, स्वभाव को नहीं जानता वह उसे कैसे प्राप्त कर सकता है? वेद तो स्पष्ट कहता है- **''यस्तन्नवेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।''** ब्रह्मा, विष्णु, महेश की काल्पनिक आकृतियों को देखने वाला और उनसे बातचीत करने का दम्भ करने वाले का ईश्वर-साक्षात्कार से क्या लेना-देना? परमात्मा से मिलना तो बहुत दूर की बात है, पहले उसे जानना आवश्यक है। **तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।** वेद के अनुसार तो जिस ऋग्वेदादि वेद मात्र से प्रतिपादित नाशरहित उत्तम आकाश के बीच व्यापक परमेश्वर में समस्त पृथिवी सूर्यादि देव आधेय रूप से स्थित होते हैं, जो उस परब्रह्म परमेश्वर को नहीं जानता, वह चार वेद से क्या कर सकता है और जो उस परम ब्रह्म को जानते हैं, वे ही अच्छे प्रकार ब्रह्म में स्थित होते हैं। बिना उसे जाने ईश-साक्षात्कार तो दिवा-स्वप्न ही रहेगा।

प्रसंगाधीन लेख की इस प्रकार की सभी बातें असंगत हैं, सिद्धान्त-विरुद्ध हैं और भ्रामक हैं।

-जागृति विहार, मेरठ

प्रतिक्रिया

१. आदरणीय व्यवस्थापक महोदय, सप्रेम नमस्ते। कुछ दिन पहले महर्षि दयानन्द जी के १३२वें बलिदान-समारोह पर आने का अवसर मिला, जो कि हमारे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण बन गया। नवी मुम्बई की वाशी आर्य समाज के लगभग बीस लोग साथ में आए और यहाँ आकर सबको सुखद आश्चर्य हुआ। इतने सारे लोग महर्षि को याद करने के लिए आए और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। हजारों लोगों के रहने की, खाने की, कम्बल-दरिया-गद्दे, गर्म-ठण्डा पानी, सबसे अच्छे विद्वानजनों का सरल भाषा में हवन-यज्ञ पर बैठने की व्यवस्था, अनुशासन आदि सब अपने आपमें अद्वितीय था, सुबह योग की कक्षा। सभी बातें जैसे मीठी यादें हों। मैं आपको, सभी अधिकारियों को हृदय से साधुवाद देती हूँ।

- कमल अग्रवाल, वाशी, नवी मुम्बई

२. श्रीमान् सम्पादक महोदय, आचार्य आनन्द प्रकाश का लेख 'संस्कृत की शब्द-सम्पदा' पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। लेखक ने संस्कृत भाषा की सजीवता, उसकी शब्द-सम्पदा और उसकी शब्द-सृजन की शक्ति का दिग्दर्शन कराया है, जिससे संस्कृत को मृतभाषा बताने वाले अज्ञानियों की आँखें खुलेंगी।

- मोहन उपाध्याय, कृष्णगंज, विकासपुरी, अजमेर

३. प्रो. धर्मवीर जी, सादर नमस्ते। परोपकारी में आपका सम्पादकीय 'हिन्दू कौन' में हिन्दू की परिभाषा पढ़ी। लेख अभूतपूर्व है। इसे पहले मैंने इस विषय पर इतना सुन्दर, सटीक, सारगर्भित लेख नहीं पढ़ा, न ही सुना। आपको हार्दिक बधाई। वैसे आपके सभी सम्पादकीय सुन्दर होते हैं, पर यह विशिष्ट बन पड़ा है, इसका व्यापक प्रचार-प्रसार होना चाहिये। आज की अंधेर नगरी में लेख प्रकाश (पुंज) किरण जैसा है। आपके प्रवचन (आस्था चैनल) भी सुन्दर हैं और लोकप्रिय।

- ओ.एस. अत्री, नानकगंज, सिपरी बाजार, झाँसी, उ.प्र.

४. मैं पिछले कई वर्षों से परोपकारी पत्रिका पढ़ रहा हूँ। आपके सम्पादकीय लेख को अवश्य ध्यानपूर्वक पढ़ता हूँ, जो पाठकों के लिये विशेष ज्ञानवर्धक और नई-नई जानकारी देने वाले होते हैं। परोपकारी अक्टूबर प्रथम-२०१५ में आपके सम्पादकीय लेख 'तिब्बत की दासता, अहिंसक होने का दण्ड' को पढ़कर, प्रथम मानव के मूल जन्म स्थान के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। आपका यह लेख वर्तमान राजनेताओं के लिये भविष्य में तिब्बत के विषय में मार्गदर्शक होगा।

- लालचन्द आर्य, म.नं. १२२३/३४, शीतल नगर, बागवाली गली, झज्जर रोड, रोहतक, हरि.-१२४००१

५. आदरणीय धर्मवीर जी, विनम्र नमस्ते।

आशा है आप सब लोग कुशल पूर्वक होंगे। मुझे आपका 'परोपकारी' निरन्तर अपने समय पर मिल जाता है और इस प्रकार से आपका भरपूर प्यार भी मिल जाता है। अब आप जानते ही हैं कि आयु ज्यों-ज्यों ढ़लती जा रही है और इस कारण से कहीं जाना वगैरा भी अधिक नहीं हो पाता तो ऐसे वातावरण में आपका परोपकारी सचमुच में अपना नाम सार्थक करता है और हमारा समय कुछ तड़प-कुछ झड़प और कुछ दूसरी बातों में और आर्य समाज के पुराने इतिहास के बारे में पढ़ कर ज्ञान भी मिलता है तथा समय भी भली प्रकार से व्यतीत हो जाता है, जिसके लिये हम आपके कृतज्ञ हैं कि आप ऐसी कृपा हमारे ऊपर बनाये रखियेगा और स्तुता वरदा वेद माता की कड़ी को बनाते रहियेगा। प्रभु आपको सर्वदा सुखी रखे और आपका मार्गदर्शन इसी प्रकार से हमको मिलता रहे। आपके सब सहयोगियों को भी धन्यवाद।

- गुरुदत्त तिवाड़ी, नई दिल्ली

६. आपके सुदक्ष सम्पादन से सम्पादित 'परोपकारी' का सश्रद्ध पाठक बनते हुए विगत (अंक-२४) दिसम्बर (द्वितीय)-२०१५ का सम्पादकीय पढ़कर मुझे काफी हर्ष हुआ।

लोकसभा के मान्यवर सांसद मल्लिकार्जुन खड़गे का कथन 'आर्यों का आगमन भारतवर्ष के बाहर से हुआ था' जैसी भ्रान्त धारणा का आपने बड़े ही सुन्दर ढंग से सप्रमाण खण्डन किया है। इस हेतु मैं आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ। वास्तविक 'आर्य' और 'अनार्य' शब्द जातिवाचक नहीं, अपितु गुणवाचक ही हैं, जिसका प्रमाण '**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**' वेद मन्त्रांश ही पर्याप्त है। वस्तुतः वेद अपौरुषेय

होने के नाते मानवजाति के कल्याण के लिए ईश्वर की अनमोल देन मानी जाती है। यह किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, देश, काल में सीमित नहीं है, अत: ईश्वर की कृति में जो प्रमाण उपलब्ध है, वही सर्वमान्य है। परन्तु यह दुर्भाग्य है कि हमारे इतिहास को पाश्चात्य विद्वानों ने लिखा, जिसके कारण एतादृश बहुत सारी भ्रान्त धारणाएँ लोगों के मन से हटाने के लिए इस प्रकार के संघर्ष जारी रखना होगा। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि पहले विद्वानों में जैसे शास्त्रार्थ होता था, वैसे ही ऐतिहासिकों के साथ आप जैसे हमारे सच्चे भारतीय विद्वानों के शास्त्रार्थ की आवश्यकता है, जिससे भारतीय इतिहास पर लोगों की जो भ्रान्त धारणाएँ हैं- वे दूर हो सकें।

-सच्चिदानद महापात्र, विभागीय मुख्य, संस्कृति विभाग, सामन्त चन्द्रशेखर (स्वयंशासित) कॉलेज, पुरी

७. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रमुख स्थानों में ऋषि उद्यान या उनका अजमेर प्रवास काफी प्रसिद्ध एवं प्रशंसित है। टंकारा, उदयपुर का नवलखा महल, बनारस का काशी-शास्त्रार्थ स्थल देखे हुए थे, लेकिन अजमेर ऋषि उद्यान आकर लगा कि यहाँ नहीं देखा, तो सब अधूरा था।

यहाँ का परिसर भी बहुत बड़ा है तथा यज्ञशाला तो बहुत ही सुन्दर लगी। जब सुबह-शाम मन्त्रोच्चारण के साथ हवन होता है, तब सारा वातावरण पवित्र गुंजायमान हो जाता है। सुबह प्रात:कालीन मन्त्रों से होती है। दर्शन, उपनिषद्, व्याकरण की कक्षाएँ चलती हैं। ४ जनवरी से मीमांसा दर्शन का प्रारम्भ था, जिसके लिए हम लोग आए थे। आचार्य सत्यजित् जी ने वानप्रस्थ साधक आश्रम में न्याय दर्शन की कक्षाएँ ली थीं, उन्हीं की सलाह पर यहाँ मीमांसा दर्शन की भूमिका सुनी। इसी के कारण ऋषि उद्यान देखने का संयोग बना और ज्यादा खुशी इस बात की हुई कि हमने चिर-परिचित ऋषि उद्यान देखने का अवसर मिला, साथ ही भिनाय कोठी और स्वामी जी का अन्तिम संस्कार धाम को देखा।

आचार्य धर्मवीर जी के प्रवचन सुनने को मिले, जो अब तक सम्पादकीय में पढ़ते आए थे। उनकी नम्रता भी देखने को मिली, जब हम लोग परोपकारिणी सभा देखने जा रहे थे, तब कार में वे बैठ चुके थे, किन्तु हम लोगों को आते देख वे स्वयं पीछे जाकर बैठ गए।

स्वामी जी की स्थापित और अमूल्य किताबों का संग्रह पुस्तकालय में देखा। इतने सब लोगों के होते हुए सब शान्तिपूर्ण तरीके से कार्य होते रहते हैं। सभी के अपने-अपने कार्य होते हैं, कोई यज्ञ की तैयारी करता है, कोई सब्जी लाता, किसी के पास दूध देने का कार्य है, किसी के पास खाना और कोई रसद का प्रबन्धक है। यह भी एक अनुकरणीय कार्य है।

दस दिन कैसे निकल गए, पता नहीं चला। इस बार तो मीमांसा नहीं पढ़ा, किन्तु ऋषि उद्यान का भ्रमण प्रवास बहुत अच्छा रहा। सभी आश्रमवासियों को बहुत-बहुत धन्यवाद तथा शुभकामनाएँ, नए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा रहा।

- एक यात्री

८. सम्मान्या: श्रीमतिपरोपकारिणिसभाया: प्रधानपदमादधाना: डॉ. धर्मवीर महाभागा:, समे सभ्यास्तदीयास्सदस्याश्च! सादरं समेषां भवतामस्मत्पक्षतो भूयोभूयो वन्दनमाभिनन्दनञ्च सनमोवाकम्।

विद्वद्वरेण्यैरभिनन्दनं मे
कृतन्तदर्थं सततं कृतज्ञ:।
कान् धन्यवादान् वितनोमि मान्या:,
शक्ता न वाणी कथने मदीया।।१।।

मदीयसम्मानमिदं कृतं यत्,
तत्संस्कृतस्यैव सदैव मन्ये।
धन्या जनास्ते भुवि भान्ति नित्यं,
ये संस्कृतं सम्प्रति धारयन्ति।।२।।

दिव्या मदीया सुरभारतीयं
सर्वत्र लोकेऽत्र विचारचर्चा।
विश्वेऽस्य देशस्य यश: प्रतिष्ठा,
सा संस्कृतेनैव सदा विभाति।।३।।

सुरक्षिता संस्कृतभाषयैव,
स्वसंस्कृति: सम्प्रति भारतेऽस्मिन्।
सर्वैर्मिलित्वाद्य विचारणीयं
किं भारतं संस्कृतमन्तरेण।।४।।

अन्ते मदीयो विनयो विनम्र:,
सर्वैर्भवद्भि: दृढतां दधानै:।
कार्या प्रतिज्ञा हृदयेन सत्या
बद्धा कटि: संस्कृतरक्षणाय।।५।।

- डॉ. रामप्रकाश: वर्णी, अध्यक्ष एवं रीडर संस्कृत विभाग, एल.आर. डिग्री कॉलेज, जसराना, जनपद-फिरोजाबाद, उ.प्र.

स्तुता मया वरदा वेदमाता-२८

ममेदनुक्रतुंपतिः सेहानाया उपाचरेत्।

मन्त्र के प्रथम भाग में नारी की घोषणा थी- परिवार में मैं केतु हूँ, मैं मूर्धा हूँ, मैं विवाचनी अर्थात् विवेकपूर्वक बात कहने वाली हूँ। इस प्रकार परिवार के प्रति योग्यता और सामर्थ्य दोनों बातों का उल्लेख आ गया। योग्यता से मनुष्य में सामर्थ्य आता है। मनुष्य ज्ञान से आत्मशक्ति सम्पन्न बनता है। इसलिये शास्त्र में कहा है- आत्मवत्तेति- आत्मवान तभी बन पाता है, जब उस अन्दर ज्ञान की उपस्थिति होती है। आगे कहा गया है कि केवल ज्ञान और योग्यता ही नहीं, मेरे अन्दर कर्मनिष्ठा भी है।

मनुष्य का जीवन चाहे व्यक्तिगत हो, पारिवारिक अथवा सामाजिक, वह जितना कर्मशील होगा, उतना ही लोगों को प्रिय होगा। हम समाज में ऐसे लोगों को बहुशः देखते हैं, जिनके पास ज्ञान है, कर्म करने का सामर्थ्य भी है, परन्तु आलस्य और प्रमाद से जीवन में कुछ भी नहीं कर पाते। जो उत्पन्न हुआ, वह बड़ा भी होगा, वृद्ध भी होगा। उसकी मृत्यु भी होगी, यह किसी मनुष्य के चाहने से न होता है, न हो सकता है। इसी समय को आप सोकर, मनोरञ्जन करके व्यतीत कर सकते हैं, यदि इसी अवधि में मनुष्य कोई सार्थक कार्य करता है, तो वह सफलता को प्राप्त कर लेता है। मनुष्य के पास सफलता अकस्मात, एक बार में नहीं आती, उसे परिश्रमपूर्वक उपार्जित करना पड़ता है। मनुष्य को क्रतु बनना चाहिए, कर्मशील होना चाहिए। वैदिक साहित्य में क्रतु कर्म और बुद्धि दोनों का नाम है। जो कर्म नहीं करते, उन्हें वेद दस्यु कहता है। दस्यु का अर्थ होता है- डाकू। डाकू कहने से हमें लगता है जो शारीरिक बल से दूसरे का धन हरण करता है, वही डाकू है, परन्तु इसका केवल इतना ही अर्थ नहीं, जो व्यक्ति बुद्धि-बल से भी दूसरे के अधिकार का, स्वत्व का हनन करते हैं, अपहरण करते हैं, वे भी डाकू ही हैं। अकर्मण्य बुद्धिमान् लोग दूसरों का धन छल से, ठगी से हर लेते हैं, ऐसे कर्म क्रतु नहीं हैं।

क्रतु यज्ञ को भी कहा गया है। यज्ञ कर्म है परन्तु किसी के धन अथवा स्वत्व के अपहरण के लिये नहीं किया जाता। यज्ञ परोपकार का ही दूसरा नाम है। बुद्धि का उपयोग परोपकार और उन्नति की भावना से किया जाय तो ऐसा कर्म क्रतु है, यज्ञ है। परिवार का संचालन यज्ञ है। यज्ञकर्त्ता अपने कर्म नहीं करता, वह सबके लिये यज्ञ करता है। सबका कल्याण करने की भावना से यज्ञ किया जाता है। वैसे तो परिवार में सभी सदस्यों को परस्पर एक-दूसरे के हित की कामना करनी चाहिये, परन्तु वहाँ सब समान रूप से शिक्षित या ज्ञानवान नहीं होते हैं और न ही अनुभवी। अतः मुख्य व्यक्ति को ही सबके हित व कल्याण की चिन्ता करनी होती है। परिवार में दो ही व्यक्ति धुरा का वहन करते हैं, जिन्हें हम पति-पत्नि कहते हैं। इन दोनों की योग्यता व विचार समान होने के साथ-साथ गति भी समान होनी चाहिए। सभी परिवार के सदस्यों की चिन्तन की दिशा एक हो तो समायोजन में कोई असुविधा नहीं आती। कठिनाई तब होती है, जब विचारों की भिन्नता के साथ हम परिवार को अपनी-अपनी इच्छानुसार चलाना चाहते हैं।

वेद कह रहा है- पति केवल सहनशील नहीं है, वह पत्नी के कार्यों का समर्थन भी करता है, परिवार में उन विचारों को क्रियान्वित करने में प्रयासपूर्वक लगा रहता है। इस सन्दर्भ में दो बातों की ओर संकेत किया गया है, पत्नी के विचार श्रेष्ठ हैं और कार्य उत्तम हैं। इतना पर्याप्त नहीं है, पत्नी के कार्यों के लिये पति का समर्थन भी चाहिए और सहयोग भी। मन्त्र इन्हीं बातों को बता रहा है। मनुष्य का स्वभाव है कि यदि वह कुछ अनुचित करता है, तो वह उसे सबसे अज्ञात रखना चाहता है, परन्तु उससे कुछ अच्छा हुआ है, तो उसकी इच्छा रहती है, सभी लोगों को उसके श्रेष्ठ कार्य का ज्ञान हो। स्वाभाविक है किसी बात का ज्ञान होगा तो उसकी चर्चा भी होगी। यह चर्चा उस कार्य की प्रशंसा है, कार्य करने वाले व्यक्ति की प्रशंसा है। प्रशंसा से व्यक्ति उत्साहित होकर, उस कार्य में अधिक परिश्रम करता है। निन्दा-प्रशंसा का मनुष्य ही नहीं, प्राणियों के जीवन पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। अनुचित कार्य की निन्दा नहीं होती अथवा प्रशंसा की जाती है तो अनुचित

कार्यों को करने में मनुष्य की अधिकाधिक प्रवृत्ति होती है। अत: उचित की प्रशंसा उचित कार्य की वृद्धि का हेतु होता है।

शास्त्र कहता है- यदि कोई दुष्ट मनुष्य भी यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म कर रहा है, तो उस समय उसकी निन्दा नहीं करनी चाहिए, ऐसा कार्य करते हुए मनुष्य की निन्दा करने से श्रेष्ठ कार्य की भी निन्दा हो जाती है। यह मनोविज्ञान की ही बात है। मनुष्य के मन पर आलोचना और प्रशंसा का परोक्ष-प्रत्यक्ष बहुत प्रभाव पड़ता है। हम परिवार में अच्छे कामों के लिये जब बच्चों की प्रशंसा करते हैं, तो उनमें अच्छा कार्य करने का उत्साह बढ़ता है, यह बात बड़ों के लिये भी उतनी ही स्वाभाविक है। हम बड़ों के द्वारा किये कार्यों को पाप-पुण्य से जोड़कर देखते हैं। बच्चों के कार्य का प्रभाव बहुत नहीं होता, परन्तु बड़े व्यक्ति के द्वारा किया गया कार्य परिवार और समाज को गहरा प्रभावित करता है। अत: कहा गया है- पति को प्रशंसक और सहयोगी होना चाहिए।

क्रमश: .....

महान् आचार्य बलदेव जी महाराज

-पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

आचार्य बलदेव जी, सार्वदेशिक प्रधान।
ईश भक्त धर्मात्मा, थे सच्चे इंसान।।
थे सच्चे इंसान, वेद मर्यादा पालक।
स्वामी ओमानन्द रहे, गुरु उनके लायक।।
देशभक्त, गुणवान, धर्म के थे अनुरागी।
पर उपकारी सन्त, सत्यवादी थे त्यागी।।१।।

खोला गुरुकुल कालवा, किया धर्म का काम।
देव पुरुष ने कर दिया, सकल विश्व में नाम।।
सकल विश्व में नाम, हजारों बाल पढ़ाए।
देशभक्त विद्वान्, सैकड़ों शिष्य बनाए।।
राजसिंह अरु धर्मवीर को, ज्ञान सिखाया।
रामदेव को सकल विश्व में है चमकाया।।२।।

दर्शनाचार्य थे बड़े, थे गोभक्त महान्।
आर्य जगत में सब जगह, उनका था सम्मान।।
उनका था सम्मान, कर्म अच्छे करते थे।
मानवता के पुंज, पराया दु:ख हरते थे।।
हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में, काम किया था।
तारा सिंह, प्रताप सिंह को, हरा दिया था।।३।।

हाँ, आचार्य प्रवर गए, छोड़ सकल संसार।
मौत अचम्भा है बड़ा, मित्रो! करो विचार।।
मित्रो! करो विचार, जगत में जो जन आता।
राजा हो या रंक, काल सबको खा जाता।।
राम, कृष्ण, चाणक्य, न यम से बचने पाए।
अर्जुन, पृथ्वीराज, काल ने ग्रास बनाए।।४।।

सुनो आर्यो! ध्यान से, एक काम की बात।
आपस में तुम मत करो, अब विवाद की बात।।
अब विवाद की बात करोगे, पछताओगे।
कहता हूँ मैं साफ, एक दिन मिट जाओगे।।
जगत्गुरु ऋषि दयानन्द की शिक्षा मानो।
अहंकार दो त्याग, धर्म अपना अब जानो।।५।।

आर्य सदन बहीन जनपद पलवल (हरियाणा)

जब तक मनुष्य सुख-दु:ख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इस से मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०

संस्था - समाचार

१६ से ३१ जनवरी २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा विदित है कि ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से हैं,जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी सज्जन, माताएँ, बहनें, बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मंजरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर दर्शन, उपनिषद्, रचना अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिनमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। आर्यवीर दल का प्रशिक्षण कार्यक्रम सुबह-शाम नियमित रूप से होता है, जिसमें खेल-कूद, व्यायाम, जुडो-कराटे, लाठी चलाने का अभ्यास आदि कराया जाता है। इसमें नगर के युवा वर्ग और बालक भाग लेते हैं। प्रतिदिन प्रात:काल सरस्वती भवन प्रांगण में योग कराया जाता है, जिसमें आसन, प्राणायाम, ध्यान आदि का अभ्यास किया जाता है।

प्रात: कालीन सत्संग में ईश्वर चिन्तन की नित्य आवश्यकता बताते हुए **श्री सत्येन्द्र सिंह जी** ने कहा कि हजारों मनुष्यों में कोई एक मनुष्य ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रयास करता है। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं, जो ईश्वर के विषय में जानने, चर्चा सुनने में रुचि रखते हैं। ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, स्वरूप के नित्य प्रति चिन्तन, स्वाध्याय से आत्मिक उन्नति होती है और हम पतन से बचते हैं। ईश्वर निराकार, पवित्र, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है, सब मनुष्यों को सत्य-ज्ञान देने वाला तथा अनन्त गुणों वाला है, इसलिये स्वामी दयानन्द जी ने अपने सब ग्रन्थों का आरम्भ ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना से किया है। परमात्मा कण-कण में व्याप्त है, किन्तु संसार के पदार्थों में लिप्त नहीं होता। वह न्यायाधीश और पूरे संसार का स्वामी है। हम प्रभु को अपने सब ओर अनुभव करके ही पाप से बच सकते हैं। उसकी निकटता प्राप्त करने के लिये यम-नियम का पालन करते हुए तप करके पात्र बनना आवश्यक है। शरीर को कष्ट देना, भूखे-प्यासे रहना मात्र तप नहीं है, किन्तु निरन्तर सत्य-व्यवहार, विद्या-ग्रहण, मन का संयम, इन्द्रिय-निग्रह, धर्म-पालन, योगाभ्यास, मोक्ष-दायक वेद-शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना आदि तप है।

अगले दिन यजुर्वेद के इक्कीसवें अध्याय के मन्त्रों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि अपने जीवन, स्वास्थ्य, धन, बुद्धि संतान, परिवार, व्यापार, स्वतन्त्रता आदि की रक्षा चाहने वाले मनुष्यों को उत्तम विद्वानों को सम्मानपूर्वक बुलाकर उनकी निकटता प्राप्त कर उपदेश ग्रहण करना चाहिये, जिससे शीघ्र सब दु:ख दूर होकर सुख प्राप्त होवें। सब मनुष्यों को उत्तम विद्वानों से ही उपदेश ग्रहण करना चाहिये। प्राचीन काल के सभी राजा-महाराजा बड़े-बड़े ऋषियों के मार्गदर्शन में अपना राज्य संचालन करते थे। विद्वानों के उपदेश के बिना दुर्व्यसनों का दूर होना असम्भव है। समाज में उत्पन्न होने वाली कुरीतियों का निवारण उपदेश के बिना बहुत कठिन है, अत: जिस प्रकार एक अच्छा यजमान उत्तम पदार्थों से आहुति देता है, उसी प्रकार विद्वानों को सम्मान-पूर्वक बुलाना चाहिये। विद्वानों के सत्कार में छल नहीं करना चाहिये। आगे विद्वानों के गुणों को कहा कि उत्तम विद्वान् अग्नि के समान अपने श्रेष्ठ गुणों से प्रकाशित, अपनी विद्या से दूसरों के अज्ञान-अन्धकार रूपी दु:खों को दूर करने वाला, सदा ऊपर की ओर उठने अर्थात् उन्नति की ओर अग्रसर रहने वाला, अपने गुणों से दूसरों को प्रभावित करने वाला, उत्तम यज्ञ करने वाला, वाणी, चरित्र और व्यवहार को पवित्र करने वाला, दोषों को दूर करने वाला, शङ्का-समाधान करने वाला, सदाचारी और चरित्रवान् होना चाहिये। इसीलिए विद्वान् अपने गुणों के कारण राजा से भी अधिक सम्मान के योग्य होता है।

आगे सामाजिक विषय पर आपने कहा कि आर्य समाज के नेताओं और संन्यासियों से अंग्रेज सरकार डरती थी। न्यायालयों में आर्य समाजी के साक्ष्य से निर्णय होता था। आर्य समाज की प्रतिष्ठा जैसी स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व थी, वैसी अब नहीं है, क्योंकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आर्य समाज के संन्यासी और विद्वान् समझौतावादी हो गये। त्याग, तपस्या, विद्या के नाम पर लोकेषणा और वित्तेषणा पूर्ति में लग गये। **स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती**

जी के अनुसार आर्य-समाज की प्रतिष्ठा वापस लौटाने के लिए पाँच काम करने होंगे- १. मूर्तिपूजा और अवतारवाद का बिना समझौता किये खण्डन करना। २. जन्मना जातिप्रथा और ब्राह्मणवाद का खण्डन करना। ३. छुआछूत को दूर करना। ४. जन्मपत्री, राशिफल, ग्रहपूजा, ज्योतिष आदि के पाखण्ड को दूर करना। ५. गुरुडमवाद एवं अन्य ढोंग-पाखण्ड-अन्धविश्वास को मिटाना।

प्रात:कालीन सत्संग में प्रवचन करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि हम वेद से प्रतिदिन प्रेरणा लेने का प्रयास करते हैं। वेद हमारी श्रद्धा के केन्द्र हैं। प्रत्येक मन्त्र अपने-आपमें पूर्ण होता है और विशेष शिक्षाप्रद होता है। सब मनुष्यों को ईश्वर की उपासना करते हुए उसकी मित्रता को प्राप्त करना चाहिये। इसी प्रकार यथार्थ वक्ता, परोपकारी, बुद्धिमान्, सत्यव्यवहार करने और सुख देने वाले, न्यायकारी विनम्र धार्मिक राजा की मित्रता को भी प्राप्त करना चाहिये एवं मन से उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिये। आप्त विद्वान् की मित्रता को भी प्राप्त करना चाहिये। अन्य श्रेष्ठ गुण वाले, पक्षपात-रहित सज्जन मनुष्यों को मित्र बनाना तथा उनके कार्यों में सहयोग करना हम सबका कर्त्तव्य है। अधर्मी, दुर्जन मनुष्यों का कभी समर्थन नहीं करना चाहिये। मनुष्यों में मित्रता, एक-दूसरे के अनुकूल चलने, परस्पर सहयोग करने से होती है।

प्रात:कालीन सत्संग में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि प्रात:काल उठते ही और रात्रि में सोते समय हमारे मन में जो विचार रहते हैं, उनके ऊपर हमारे दिन और रात टिके रहते हैं। जो व्यक्ति रात्रि में सोते समय जैसा विचार मन में लेकर सोता है, वैसा ही विचार सुबह उठते समय रहता है। वैदिक आदर्श दिनचर्या में सोते और उठते समय वेदमन्त्रों का पाठ करते हैं। आगे आपने व्यवहार सम्बन्धी बातों को रखा कि समर्थ व्यक्ति से हम जुड़ते हैं और असमर्थ से अलग रहते हैं। हम समर्थ होते हैं तो लोग हमसे जुड़ते हैं और हम असमर्थ होते हैं तो लोग हमसे दूर हो जाते हैं। दूसरे लोग हमसे प्रेमभाव से जुड़ते हैं। मनुष्य और पशु दोनों ही प्रेम से विशेष प्रभावित होते हैं। समीप रहने से लोग जुड़ते हैं। जैसे एक गाँव, एक मोहल्ला, एक मकान, एक कार्यशाला तथा सेना की टुकड़ी में पास-पास रहने से लोग आपस में जुड़ जाते हैं। प्रशंसा करने और विनम्रतापूर्वक अभिवादन करने से भी लोग जुड़ते हैं।

प्रात:कालीन सत्संग में **पंडित कमलेश अग्निहोत्री जी** ने **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति** की व्याख्या करते हुए कहा कि ईश्वर को पुकारने वाले सभी भक्त और विद्वान् लोग उसे अनेक नामों से कहते हैं। ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव अनेक हैं, इसलिये उसके नाम भी अनेक हैं। व्यावहारिक जीवन में भी हम देखते हैं कि एक मनुष्य का एक ही नाम होता है, किन्तु अन्य लोग उन्हें अनेक सम्बोधनों से बुलाते हैं, जैसे डॉक्टर, प्रोफेसर, शिक्षक, अध्यापक, गुरु, आचार्य, उपाध्याय, शास्त्री, पुरोहित, ब्रह्मा, पंडित, वक्ता आदि, सम्बन्ध के आधार पर पिता, पति, पुत्र, भाई, चाचा, मामा आदि, कार्य के आधार पर सैनिक, रक्षक, डॉक्टर, इंजिनीयर, दर्जी, बढ़ई, किसान, व्यापारी, कर्मचारी, मजदूर आदि।

प्रात: कालीन सत्संग में **स्वामी मुक्तानन्द जी** ने कहा कि हम सब जीवन को सफल बनाने के लिए प्रयासरत हैं। जीवन की सफलता के लिए जहाँ आदर्श दिनचर्या का पालन करते हैं, ऋषियों के ग्रन्थों का स्वाध्याय करते हैं, वहाँ एक तत्त्व और आवश्यक है, वह है-ईश्वर। ईश्वर को जीवन के साथ जोड़ने से सफलता प्राप्त होती है। हमारे जीवन में ईश्वर से जुड़ने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमारे अन्दर जागरूकता आती है। जैसे गुरुकुल के ब्रह्मचारी आचार्य की उपस्थिति में जागरूक, सतर्क रहते हैं तथा दिनचर्या के सभी कार्य करते हैं, अनुशासन में रहते हैं। प्रात: जागरण से लेकर रात्रि तक पढ़ने आदि में आलस्य नहीं करते और उनकी अनुपस्थिति में आलस्य-प्रमाद करते हैं। इसी प्रकार जब हम सभा में होते हैं तो सभ्य होते हैं, क्योंकि बहुत लोग हमें देख रहे हैं, इसलिये हम सभ्य और शिष्ट बने रहते हैं। ऐसे ही जब हम यह जानते और मानते हैं कि सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् न्यायकारी ईश्वर हजारों नेत्रों से हमें हर समय देख रहा है तो हम अधर्म करने से बच जाते हैं और इससे हमारे जीवन में परिवर्तन आता है।

गणतंत्र दिवस सम्पन्न - ऋषि उद्यान में यह राष्ट्रीय पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर **श्री सत्येन्द्र सिंह जी** ने सबको बधाई देते हुए बताया कि आज ही के दिन २६ जनवरी सन् १९५० में हमारे देश का संविधान लागू हुआ। इस संविधान के लागू होने से पहले हमारे देश में ब्रिटिश कानून ही प्रचलित था। श्री सच्चिदानन्द सिन्हा की अध्यक्षता में दिसम्बर सन् १९४६ में पहली सभा दिल्ली में हुई, जिसमें संविधान निर्माण का प्रस्ताव पारित हुआ। श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर ने संविधान को वैदिक-संस्कृति के आधार पर हिन्दी भाषा में बनाने का प्रस्ताव रखा। यद्यपि यह प्रस्ताव अन्य लोगों ने स्वीकार

नहीं किया और अंग्रेजी भाषा में संविधान बना। १५ वर्ष बाद हिन्दी में सरकारी कामकाज करने का निश्चय किया गया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद संविधान-सभा के अध्यक्ष तथा डॉ. भीमराव अम्बेडकर, सेठ गोविन्द दास, श्री कमलापति त्रिपाठी, बाबू जगजीवनराम, श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन सदस्य थे। संविधान निर्माण का कार्य १९४९ में पूरा हुआ। संविधान में देश की एकता, समग्र विकास, नागरिकों के लिए समान अवसर और स्वतन्त्रता का विधान है। इसमें मनुस्मृति के कुछ अंश और अंग्रेजी शासन में लागू संविधान का अधिकांश भाग सम्मिलित है। **ब्र. दिलीप जी, ब्र. सोमशेखर जी** और **ब्र. रविशङ्कर जी** ने देशभक्ति के गीत प्रस्तुत किये। **सुकामा जी** इस अवसर पर बोलीं कि हमारे देशभक्त बलिदानियों के बलिदान स्वरूप प्राप्त हुई स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिए हमें संविधान के नियमों का निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए। **माता लीलावती** ने देश की स्वतंत्रता प्राप्ति में महिलाओं के योगदान को अविस्मरणीय बताया।

सायंकालीन सत्संग में महर्षि दयानन्द जी के पूना प्रवचन पर आधारित 'उपदेश मंजरी' पुस्तक की चर्चा करते हुए **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने बताया कि स्वामी जी ने दूसरे उपदेश में ईश्वर-सिद्धि पर लोगों की शङ्काओं का समाधान किया किया। उन्होंने कार्य और कारण की भिन्नता तथा अभिन्नता को उदाहरण सहित समझाया।

रविवारीय सायंकालीन सत्संग में गुरुकुल के **ब्रह्मचारी दिलीप जी** ने राजा भोज के सम्बन्ध में बताया कि वे यशस्वी, कलाप्रेमी, दानी तथा संस्कृत के विद्वान् थे। वे दूसरे विद्वानों की परीक्षा करके पर्याप्त पुरस्कार तथा उचित सम्मान देते थे। उन्होंने सरस्वतीकण्ठाभरणम् नामक व्याकरण, श्रृंगार शास्त्र, समरांगणसूत्र एवं अन्य ग्रन्थों की रचना की। उनके राज्य में लकड़हारा, जुलाहा और कुम्हार भी संस्कृत में बात करते थे। उनकी राजधानी का नाम धारा था, जो मध्यप्रदेश में स्थित है। राजा भोज वीर, दयालु और बड़े उदार थे। कवि बल्लाल ने भोज प्रबन्ध नाम से उनका जीवन-चरित्र लिखा है, जिसमें लिखा है कि राजा भोज ने ५५ वर्ष, ७ माह और ३ दिन शासन किया।

रविवारीय सत्संग में **ब्रह्मचारी सत्यव्रत जी** ने कहा कि जब-जब देश पर संकट आया, तब-तब महापुरुषों ने ढाल बनकर हमें बचाया। ५००० वर्ष पहले जब धर्म का नाश हो रहा था, तब महाराज श्री कृष्ण जी ने अधर्मियों, देशद्रोहियों को मिटाकर धर्म की रक्षा की। महर्षि सांदिपनी के आश्रम, उज्जैन में उन्होंने तपस्यापूर्वक वेदाध्ययन किया। उनका मानना था कि राष्ट्र-रक्षा के लिये ब्रह्मशक्ति और क्षात्रशक्ति दोनों मिलकर काम करती हैं, तभी कल्याण होता है। वे गुण-कर्म-स्वभाव से एक महान् क्षत्रिय, ऋषियों के अनुयायी और ईश्वर के उपासक थे। उन्होंने राजनीति के माध्यम से पूरे विश्व में वैदिक संस्कृति को स्थापित करने के लिये जीवन भर संघर्ष किया। उनके सम्बन्ध में जो गोपियों के संग रासलीला आदि कथाएँ प्रचलित हैं, वे पूर्णत: असत्य और अप्रामाणिक हैं।

रविवार प्रात:कालीन सत्संग में सभा मंत्री **श्री ओममुनि जी** ने भजन सुनाया, जिसके बोल थे- ''मै नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया....''।

डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:- सम्पन्न कार्यक्रम:- (क) १७-२४ जनवरी २०१६- सूरजमल विहार, दिल्ली में आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव।

(ख) १५-२७ जनवरी २०१६- भिण्ड, म.प्र. में उपदेश।

(ग) २९-३१जनवरी २०१६- पवई, मुम्बई में पारिवारिक सत्संग।

आगामी कार्यक्रम:- (क) ४-५ फरवरी २०१६- दिल्ली पारिवारिक सत्संग।

(ख) ६-७ फरवरी २०१६ दयानन्द मठ रोहतक।

आचार्य सोमदेव जी के कार्यक्रम:- (क) १६-१७ जनवरी २०१६- ग्राम टिटोली, रोहतक में सवा मन घी से यज्ञ।

(ख) २९-३१ जनवरी २०१६- गुरुकुल हरीपुर, उड़ीसा में वाषिकोत्सव।

आगामी कार्यक्रम:- (क) ३-७ फरवरी २०१६- गाजियाबाद, ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' ट्रस्ट की ओर से यज्ञ के ब्रह्मा। **(ख) ८ फरवरी २०१६**- प्रो. सुभाष शर्मा जी की पुण्य तिथि। **(ग) ९ फरवरी २०१६**- मोहदीनपुर, रेवाड़ी में पारिवारिक यज्ञ।

आचार्य कर्मवीर जी के कार्यक्रम:- १८ जनवरी से ६ फरवरी २०१६- तक निर्भयनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर में यज्ञ, ध्यान, आसन-प्राणायाम शिविर में प्रशिक्षक।

आचार्य सत्यप्रिय जी के कार्यक्रम:- (क) ३०-३१ जनवरी २०१६- आर्य समाज मानेवाड़ा रोड, ताजनगर, नागपुर में सत्संग। **(ख) १-२ फरवरी २०१६**- सारणी मध्यप्रदेश में श्री धमेन्द्र जी आर्य की पुत्री का नामकरण संस्कार और पारिवारिक सत्संग।

आर्यजगत् के समाचार

१. सम्मान- अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान् एवं यशस्वी लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को १७ जनवरी २०१६ को आर्य समाज रमेश नगर, नई दिल्ली ने 'विश्व वेद प्रचारक सम्मान' से विभूषित किया। उन्हें यह सम्मान मॉरीशस में सफल वेद प्रचार कर स्वदेश लौटने एवं वैदिक सिद्धान्तों व मूल्यों के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए वैदिक सत्संग समारोह में प्रदान किया गया।

२. अभिनन्दन समारोह- महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में स्व. माता धापा देवी की पुण्य तिथि के अवसर पर यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया, जिसके संयोजक महाशय रतिराम आर्य रहे। मुख्य वक्ता जीन्द-हरि. से पधारे प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. सूर्यदेव योगाचार्य रहे। उन्होंने कहा कि योग को दैनिक दिनचर्या में शामिल करना चाहिए, ताकि सभी निरोग रह सके। उन्होंने अनेक यौगिक क्रियाओं का प्रदर्शन किया और उपस्थित समूह को उसके लाभ बताए। नर्सरी की छात्रा बेटी मनस्विनी को दैनिक यज्ञ के सभी मन्त्र कण्ठस्थ हैं। उन्होंने सूर्य नमस्कार, यौगिक जोगिंग, सूक्ष्म व्यायाम, प्राणायाम और लगभग ४० आसनों का भव्य प्रदर्शन किया। इस अवसर पर ९० वर्षीय श्रीमती अशरफी देवी व श्रीमती केसरदेवी को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं. रमेशचन्द्र कौशिक ने की। उन्होंने कहा कि परोपकार ही जीवन की सार्थकता है और यज्ञ परोपकार का सबसे उत्तम कार्य है, जिसके करने से सभी को लाभ पहुँचता है और पर्यावरण को शुद्ध करके संसार को निरोगी बनाता है। मंच संचालन विजय आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर पठानकोट हवाई अड्डे पर होने वाले शहीदों को भी श्रद्धांजलि प्रदान की गई।

३. यज्ञ सम्पन्न- आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर, राज. की ओर से नगर की मुहाना मण्डी, रामपुरा रोड स्थित सैनी नर्सिंग कॉलेज में तीन दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ का समापन ३ जनवरी २०१६ को हुआ, जिसमें भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ दी। यज्ञ के होता श्री रामकिशोर शर्मा पुत्र-पौत्रादिकों के साथ थे। पुत्रगण जयदेव, डॉ. प्रशान्त एवं सी.ए. निशान्त सपत्नीक सभी सत्रों में यजमान रहे। विशिष्ट जनों में सांसद अर्जुन मेघवाल तथा राज्य के लोकायुक्त न्यायमूर्ति सज्जनसिंह भी उपस्थित थे। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सोमदेव ने वेदमन्त्रों की सुग्राह्य शैली में व्याख्या के साथ-साथ जीवन को श्रेष्ठ बनाने पर बल दिया। वेद पाठिनी श्वेता शास्त्री ने संस्कृत में मंगल गान किया।

इसके उपरान्त रामपुर- मुहाना रोड स्थित जी.एल. सैनी मैमोरियल कॉलेज ऑफ नर्सिंग में काकोरी काण्ड के शहीदों- रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खाँ व रोशनसिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम का आयोजन कॉलेज के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा किया गया। बिस्मिल की गजलों की प्रस्तुति के साथ अन्य शहीदों की राष्ट्रभक्ति भी सराही गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राजस्थान) के अध्यक्ष श्री यशपाल यश रहे। कॉलेज निदेशक दीपांकर यश ने आगुन्तकों का स्वागत और प्राचार्य योगेश गोयल ने आभार व्यक्त किया।

वैवाहिक

४. वधू चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, जन्म- ५-७-१९८५, कद- ५ फुट ६ इंच, शिक्षा- एम.एस. ईएनटी, युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित कन्या चाहिए। **सम्पर्क- ०९४१६९५१८१८**

५. वधू चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, जन्म- ११-७-१९८६, कद- ५ फुट ११ इंच, शिक्षा- एम.एस.सी. माइक्रोबायलोजी, एसआरएफ सीनियर रिसर्च फैलो कार्यरत, युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित कन्या चाहिए। **सम्पर्क- ०९४५७४०५०७६**

६. वधू चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, आयु- २६ वर्ष, कद- ५ फुट ८ इंच, शिक्षा- एम.ए. दर्शनशास्त्र योग, डी.ए.वी. दिल्ली में योग अध्यापक के रूप में कार्यरत युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित कन्या चाहिए। **सम्पर्क- ०७५९७८९४९९१**

शोक समाचार

७. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, तपस्वी नेता, प्रसिद्ध गोभक्त और हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्राण **आचार्य बलदेव जी** का निधन २८ जनवरी २०१६ को प्रातः हो गया। २९ जनवरी २०१६ को पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। परोपकारिणी सभा की ओर से आचार्य सत्यजित् जी वहाँ पहुँचे। उनके निधन से आर्य समाज की महती क्षति हुई है। परोपकारिणी सभा इस पर शोक प्रकट करती है। परोपकारिणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।